अपनी लाभदायक उम्र कैसे बढ़ायें ?

अनुवाद

अताउर्रहमान अब्दुल्लाह सईदी

ترجمہ

عطاءالرحمن بن عبد الله سعيدى

مختصر

كيف تطيل عمرك الأنتاجي؟

تأليف

د. محمد بن إبراهيم النعيم

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अपनी लाभदायक उम्र कैसे बढ़ायें ?

अनुवाद

अताउर्रहमान अब्दुल्लाह सईदी

عطاءالرحمن بن عبد الله سعيدى

पुनरीक्षण

अबूसअ़द आ़ज़मी शेख़मुज़फ्फर

(बी॰एस॰बी॰एड॰)

مختصر

كيف تطيل عمرك الأنتاجي؟

د. محمد بن إبراهيم النعيم

AL- AHSA ISLAMIK CENTER
P.O.BOX.2022
AL-AHSA PIN-31982 K.S.A
TEL. 035866672

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

بسم الله الرحمن الرحيم

भूमिका

الحمد لله رب العالمين والصلاة و السلام على الأنبياء و المرسلين و بعد

अल्लाह तआ़ला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत पर जो एहसान किया है इस से पहले की किसी उम्मत पर नहीं किया है चुनांचे इबादतों में पिछली उम्मतों पर जो पाबंदियाँ थीं उन्हें इस उम्मत से हटा दिया, ऐसा इस लिए कि इस उम्मत को वह लम्बी उम्र और जिस्मानी(शारीरिक)ताकत नहीं मिली जो इस से पहले उम्मतों को मिली थीं जबकि ये दोनों नेअ़मतें अधिक सवाब हासिल करने के मूल्य आधार हैं। चुनांचे इस उम्मत पर किये गये दया में से यह भी है कि ये कम अमल करके आधिक सवाब हासिल कर सकती हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इस नष्ट होने वाली संसार में अल्लाह तआ़ला ने सारे इन्सान एवं जिन को केवल अपनी मर्ज़ी के मुताबिक अपनी इबादत करने के लिए पैदा फर्माया है और संसार में पैदा होने वाला हर मनुष्य बालिग होने के बाद लम्बी उम्र चाहता है मगर लम्बी उम्र की चाहत रखने वालों के मकासद(उद्देश्य)अलग-अलग हैं, आखिरत हकीकत को नकारने वाले या इससे गाफिल रहने वाले की लम्मबी उम्र की चाहत का मकसद(उद्देश्य)संसार की सारी लज़्ज़तों से आनंद लेना और ऐश व आराम की लम्बी ज़िन्दगी बसर करना है, मगर आखिरत की सारी बातों पर ईमान लाने वाला लम्बी उम्र की तमन्ना केवल इस लिए करते हैं कि वह संसार की ज़िन्दगी में किमती समय और अवसर पाकर अपने सच्चे माबूद अल्लाह वहदहू लाशरिक लहू को खुश करले और

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उसके एहसानों का जहाँ तक हो सके शुक्र बजा लायें ।

मगर प्रश्न यह है कि उम्र कैसे लम्बी होगी ? इसी हकीकत को बताने के लिये कुरआन और सही हदीसों और सलफ सालिहीन के सही रहनुमाई की रोशनी में जनाब डा०मुहम्म्द बिन इब्राहिम अल्-नईम अहसा सऊदी अरब ने -कैफा तुतील उमरक अल-इन्ताजी- नामी अरबी भाषा में एक निहायत मुफीद किताब लिखी है । जिसका अनुवाद उर्दू भाषा में कर चुका हूँ । उर्दू में छप कर जब लोगों के हाथ में गई तो बार बार मांग होने लगी कि हिन्दी में भी ऐसी किताबों की बड़ी ज़रूरत है इसलिए मैं ने आसान हिन्दी में यह काम किया है ।

किताब कितनी अहम और अमली ज़िन्दगी में निखार पैदा करने के लिये कितनी मुफीद है?आप को पढ़ने के बाद ही अंदाजा होगा मेरा जहाँ तक ख्याल है ऐसी मुफीद और जगाने

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

वाली मुस्तनद किताबें हर घर में बल्कि प्रत्येक आदमी के पास होनी चाहिए क्यों कि हर एक अपनी उम्र लम्बी करना चाहता हैं।
इस किताब के पढ़ने वाले हर आदमी को मेरी नसीहत है कि अल्लाह बडा दयालू तथा बडा मेहरबान है। जो कुछ इस किताब में है उस से ज्यादह देने पर ताकत रखता है, जैसा कि अल्लाह तआला ने फर्मायाः

(يضاعف لمن يشاء والله واسع عليم)

(और अल्लाह तआ़ला जिसे चाहता है कई गुन देता है और अल्लाह(तआ़ला)बड़ा कुशादा तथा इल्म(ज्ञान) वाला है) सूरः बक़रह-261

मै इस्लामिक सेन्टर अहसा का बहुत अभारी हूँ कि उसने मुझे इस सेवा का अवसर प्रदान किया साथ ही साथ मैं आभारी हूँ अपने सत्यप्रिय अबू सअ़द शैख मुज़फ्फर का जिन्हों

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ने इस किताब पर पुनरीक्षण करके सही मशवरे दिया अल्लाह पाक उन्हें अच्छा फल दे, अल्लाह तआला से दुआ़ है कि वह मेरी इस मामूली कोशिश को कबूल फरमाये लेखक,और मेरे अहले व अयाल. वालिदैन, सारे भाई व बहन तथा जिन जिन लोगों ने किसी भी प्रकार मेरी तालिम एवं तरबियत में सहायता किया है सब के लिए सदके जारया और नेजात का साधन बनाये और मुझे मेरे सारे कामों में खोलूसे नियत दे आमीन ।

दुआ़ओं और लाभदायक मशवरों का मुहताज

अताउर्रहमान अब्दुल्लाह सईदी

अहसा इस्लामिक सेन्टर सऊदी अरब

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भूमिका लेखक

इस किताब में संक्षिप्त तथा एख्तेसार के साथ ऐसे बेशतर नेक आमाल एवं कर्मों का जिक्र किया गया है जिनका अजर व सवाब देखने वाले कें हिसाब से आप की उम्र में बढ़ोत्तरी करेगा, ताकि नेकियों से भर पूर आपकी लाभ दायक उम्र आप का निश्चित उम्र से बड़ी हो, इस किताब की हैसियत एक खुरदबीन(सूक्ष्म दर्शक यंत्र)की है जो हमारी सामने बहुत सारी ऐसी हदीसों की नई अहमियत को उजागर करती है जिन्हें हम बिना ध्यान दिये कभी कभार पढ़कर साधणतया से गुज़र जाते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इस किताब में तीन अध्याय हैं :

पहला अध्याय : उम्र लम्बी करने की अहमियत तथा अर्थ

दूसरा अध्याय : उम्रों को लंबी करने वाले कार्य और इसमें कई बयान है ।

पहला बयान : अच्छे अखलाक़ द्वारा उम्र लंबी करना ।

दूसरा बयान : कई गुना अजर तथा सवाब वाले कार्य करके उम्र लंबी करना ।

तीसरा बयानः मरने के बाद जारी रहने वाले सवाबों के द्वारा उम्र लंबी करना ।

चौथा बयानः समय का सही उपयोग करके उम्र लम्बी करना ।

तीसरी अध्याय : नेकियों से भरपूर मोफीद उम्र की हिफाज़त का तरीका ।

पहला अध्याय : विषय का महत्तवः

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आप क्यों जीना चाहते हैं ?

हमारी जीवन का मकसद(उद्देश्य) केवल खाना पीना नहीं है और अगर ऐसा है तो हम काफिरों और जानवरों के समान हैं क्यों कि उनकी दुनियावी ज़िन्दगी का मक्सद(उद्देश्य) मात्र खाना पीना और दुनियावी लज़्ज़तों एवं स्वादों से रस तथा आनन्द लेना है, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इनकी निन्दा करते हुए फरमाया है :

(وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ)

(और जो लोग काफिर हुए वह (संसार ही का) लाभ उठा रहे हैं और जानवरों के प्रकार खा रहे है नर्क उनका ठिकाना है -सूरः मुहम्मद-12)
हमारे अस्तित्तव और जीवन का उद्देश्य अल्लाह की एबादत (उपासना) करना और शैतान एवं बुरी की इच्छाओं की नाफरमानी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

करना है । तेजारती तथा व्यापारिक दृष्टि अनुसार हम यह भी कह सकते हैं कि हमारी ज़िन्दगी का सब से अहम मक्सद एवं मुख्य उद्देश्य मौत आने से पहले जितना संभव हो सके नेकियँ और भलाईयाँ बटोरना है । एक मुसलमान व्यक्ति अपनी ज़िन्दगी का ध्यान रखता है केवल जीने के लिये नहीं बल्कि इस लिए ताकि वह जितना संभव हो सके नेकियाँ जमा कर ले । अतः जब एक मुसलमान महसूस करता है कि उसकी ज़िन्दगी में नेकियाँ ज़्यादा हो रही हैं तो वह अल्लाह से अपनी लंबी उम्र करने और अमल में बेहतरी पैदा करने की दुआऐं करता है जैसा कि अबु बकरा रज़ियल्लाह अन्हु की हदीस में है कि ऐक आदमी ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि लोगों में सबसे बेहतरीन कौन है? तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया :

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

مَنْ طَالَ عُمُرُهُ وَحَسُنَ عَمَلُهُ ، قَالَ : أَيُّ النَّاسِ شَرٌّ ؟ ، قَالَ : مَنْ طَالَ عُمُرُهُ وَسَاءَ عَمَلُهُ. "

(जिसकी उम्र लंबी हो और उसका अमल बेहतर हो फिर उसने पूछा लोगों में सबसे बुरा कौन है ? आप ने फर्माया : जिकी उम्र लंबी हो और उसका अमल बुरा हो)सहहि अल्जामेअ़ -3297

एक मुश्किल :

सबसे बडा दुख जिसका अनुभव हर मुसलमान बल्कि हर इन्सान ज़्यादा करता है कि असकी ज़िन्दगी सीमित और मुतअय्यन (निश्चित) है जिस में वह एक मिनट या एक सिकन्ड ज़्यादा नहीं कर सकता और इन्सान की पूरी उम्र में से उसके आगे बढ़ने की औसत उम्र 20 वर्ष से अधिक नहीं है क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्मत की उम्र 60 साल से 70 साल के बीच होती है । अतः उम्र का

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एक तिहाई भाग इन्सान सोने में गुज़ार देता है और 15 वर्ष की उम्र तक इन्सान शरीअत का दायी तथा मुकल्लफ़ नहीं होता अतः उसकी उम्र का वह भाग जो वह खेल कूद और अन्य आनंद लेने में बिताता है। इसलिए उसकी उम्र का एक तिहाई भाग ही लगभग बचता है, इस लिए ज़रूरी है कि उन्नति काम की उम्र को बढ़ाने के लिए उम्र को लम्बी करने वाले कारण व साधन अपनायें जायें।

उम्र लंबी करने का अर्थ :

अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाह अन्हु से मरवी हदीस मे है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया:

مَنْ سَرَّهُ أَنْ يُبْسَطَ لَهُ فِي رِزْقِهِ أَوْ يُنْسَأَ لَهُ فِي أَثَرِهِ فَلْيَصِلِ

[जो व्यक्ति यह पसंद करे कि उसकी रिज़क (जीविका)में बढ़ोतरी हो और उसकी मौत पीछे कर दी जाये (अर्थात : उसकी उम्र लंबी हो) तो वह सिला रहमी करे (रिश्ते नाते जोड़े)]सही बुखारी 10/429सही मुस्लिम16/114

उम्र लंबी करने के अर्थ में ओलमा के विभिन्न मत तथा राय हैं ओलमा की तीन बातें निम्न लिखित जारही हैं :

पहली राय : बरकत : यानी कम समय में जो अमल एवं कार्य आप कर लें वह कार्य आप के अलावा दूसरा आदमी उतने कम समय में न कर सके।

दूसरी राय : हक़ीक़त (वस्तव) में लंबी होना।

तीसरी राय : मरने के बाद ज़िक्र खैर तथा अच्छी यादें।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उम्र लंबी हो जाना ऊपर लिखी गईं तीनों अर्थ को शामिल हो सकता है । अललाह पाक अपने फज़ल तथा दया से जिसे चाहता है निवाज़ता है अल्लाह तआ़ला बहुत बड़े फज़ल एवं दया वाला हैं । इस एख्तेलाफ से हम ये नतीजा लेना चाहते हैं कि उम्र लंबी होने के लिए समय बरबाद किये बिना हमारा मकसद अधिक से अधिक नेकियाँ और भलाइयाँ इकट्ठा करना हो ।

क्या उम्र लंबी होने की दुआ़ करना जायज़ है ?

इसके बारे में ओ़लमा केराम की दो रायें हैं कुछ लोग जायज़ तो कुछ नाजायज़ कहते हैं माननीय शेख मुहम्मद बिन ओसैमीन रहमतुल्लाह अ़लैहि से

(أطال الله بقاءك طال عمرك)

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

(अल्लाह तुम्हें देर तक बाकी रखे, तुम्हारी उम्र लंबी हो)
के कहने के हुकुम के बारे में पूछा गया तो उन्होने जवाब दिया कि :
आ़म तौर पर(साधारणतया)लंबी उम्र की दुआ़ करना उचित नहीं है क्यों कि लंबी उम्र अच्छी भी होती है और बुरी भी इसलिए कि लोगों में सबसे बुरे वह लोग हैं जिनकी उम्र लंबी हो और उनके कार्य बुरे हों अतः अगर ये कहा जाये कि

أطال الله بقاءك على طاعته

(अल्लाह तआ़ला अपनी इताअत तथा आज्ञा पालन पर तुम्हें लंबी उम्र दे)या इस जैसी कोई दुआ़ तो इसमें कोई बात नहीं है । देखें (अल् मनाही अल्लफ़ज़िय्यह शैख मुहम्मद बिन स्वालेह अल् ओ़सैमीन 2/225)

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दूसरी अध्याय

उम्र लंबी करने वाले कार्य तथा आमाल

पहला बयान : अच्छे अखलाक द्वारा उम्र लंबी करना।

नबी करीम स्ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया है कि कुछ अच्छी आदतों तथा भलाईयों की पाबन्दी करने से उम्र लंबी हो सकती है इन तमाम अच्छाईयों का निचोड़ लोगों के साथ अच्छे बरताव हैं। इस विषय में सबसे मज़बूत एवं बुनियादी दलील आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस है,नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फर्मायाः

إنه من أعطي حظه من الرفق فقد أعطي حظه من خير الدنيا والآخرة وصلة الرحم وحسن الجوار أو حسن الخلق يعمران الديار ويزيدان في الأعمار

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

[वास्तव में जिसे नरमी मिल गई तो उसे उसकी संसार और आखिरत का हिस्सा नसीब हो गया । और सिला रहमी (रिशते जोड़ना)अच्छे अखलाक और पड़ोसियों के साथ अच्छा बर्ताव दोनों घरों को आबाद कर देते हैं और उम्र में बढ़ोतरी करते हैं] सहीहुल् जामेअ़ अल्बानी रहमतुल्ला अलैह /3767

पहला विषय : सिला रहमी(रिश्ते जोड़ना)

सिला रहमी(रिश्ते जोड़ना)इस्लाम धर्म ने सिला रहमी जैसे अच्छे अखलाक की तालीम तथा शिक्षा दी है,अल्लाह तआ़ला ने कुर्आन की19आयतों में अपने बन्दों को सिला रहमी करने का आदेश दिया है जबकि रिश्ते नाते काटने वालों को 3 आयतों में लानत व फटकार और अज़ाब की धमकी दी है । यही कारण है कि सिला रहमी पहले के नेक लोगों

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

का नियम था जबकि उनके ज़माने में आने जाने के साधनों में कमी और यातायात में काफी कठिनाई थी। मगर हम हैं तो कुछ लोग अपने दोस्तों अथवा मित्रों के यहाँ अधिक से अधिक आते जाते हैं जबकि पूरे महीने में एक बार भी अपने रिश्तेदार के यहाँ हाल चाल लेने के लिए जाने का प्रोग्राम नहीं बनाते।

अपने रिश्तेदारों के साथ सिला रहमी करने के बारे में हमारी लापरवाही की सबसे बडी वजह हमारा अपने समय को अच्छे प्रकार से प्रयोग न करना है। अगर आप अपनी उम्र लम्बी करना चाहते हैं तो अपने रिश्ते नाते को जोड़ें क्योंकि जो उन्हें जोड़ेगा अल्लाह तआ़ला उसे जोड़ेगा और जो उन्हें काट देगा अल्लाह तआ़ला उसे काट देगा। नबी करीम सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम का फरमान है : सिला रहमी उम्र में बढ़ोत्तरी करती है।

सहीहुल_ जामेअ़ /3766

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दूसरा विषय : अच्छे अख़लाक़(व्यवहार)

अच्छा अख़लाक़(व्यवहार)वह अच्छी खूबी है जिस में यह पाई जाती है उसे ज़बान और दूसरे अंगों की मुसीबतों और आफतों से बचाते हुए उसे एहसान के ऊँचे स्थान और रुतबे पर पहुँचा देती है । अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्ला अलैह ने अच्छे अख़लाक़ का अर्थ बताया है कि : इसका अर्थ हश्शाश-बशाश , हर्षोंफुल्ल तथा खुश--खुश रहना,अधिक से अधिक भलाईयाँ करना और दुख पहुँचाने से दूर रहना,,

सच मुच मुसलमानों के लिए काफिरों के चाल व चलन,स्वभाव तथा अखलाक अपनाना बहुत बड़ा ऐब है,क्यों कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने नबी बना कर भेजे जाने का मक्सद अच्छे अखलाक की तमील तथा पूर्ति बताई है ,अतः मोमिन के नामऐ

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आमाल में अच्छे अखलाक से वज़नी कोई चीज़ नहीं है । आप बहुत सारे सल्फ स्वालेहीन को देखें किस प्रकार उन्हो ने अपने बाद वालों के लिए अचछे अखलाक की अच्छी मिसालें छोड़ी हैं जिससे उनकी नेकियाँ जारी हैं और इससे उनकी उम्र लंबी हो गई आप अपने बारे मे ध्यान दें क्या आपने अपने बाद वालों के लिये कोई ऐसा अच्छा अखलाक और एहतेराम तथा आदर के लायक़ मार्ग छोड़ा है जिस पर चला जाये ?

अच्छे अखलाक वाला होना ऐसा बेलसम है जो आप की जीवन की नवीनीकरण, लंबी यादें और प्रलय (कियामत) के दिन नेकियों के भारी करने का साधन तथा प्रतिभू है । अबुदरदा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फर्माया :

ما من شيء أثقل في ميزان المؤمن يوم القيامة من خلق حسن ، وإن الله ليبغض الفاحش البذيء

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

(कियामत के दिन मोमिन के नामए आमाल (कर्मपत्र) में अच्छे अखलाक़ से अधिक वज़नी कोई चीज़ न होगी, और अल्लाह तआ़ला फोहशगो तथा कुकर्म करने वालों को नपसंद फर्माता है)सहीहुल् जामेअ अल्बानी रहमतुल्लाह अलैह /5726

तीसरा विषय : पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार और एहसान :

पड़ोसी के साथ अच्छे बरताव उम्र को लंबी करने वाले अच्छा व्यवहार में से है, अल्लाह के रसूल ने फर्माया :

مَا زَالَ جِبْرِيلُ يُوصِينِي بِالْجَارِ حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّهُ سَيُوَرِّثُهُ

[जब्रील अलैहिस्सलाम हमें बराबर पड़ोसी के बारे में वसीयत (वचन देना)करते रहे यहाँ तक कि मुझे लगता था कि पड़ोसी को वारिस तथा उत्तराधिकारी बना देंगें] सही बुखारी /10/ 455

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

और अल्लाह के रहूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फर्माया : [जो आदमी अल्लाह और आखिरत (प्रलोक) के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अपने पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करे] सही मुस्लिम /2/20

[**अनुवादक :** आप देखें कि अम्मा आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जब पड़ोसी के हक एवं महा अधिकार के बारे में सुना और पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहा तो रसूल्लुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा : ए अल्लाह के रसूल मेरे दो पड़ोसी हैं तो मैं किसको तुहफा (उपहार)दिया करुँ ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फर्माया कि उन दोनों में से जिसका दरवाज़ा तुम्हारे से अधिक करीब है । सहीह बुखारी/ 10/46

पड़ोसियों के बीच आपस में एक दूसरे की ज़ियारत तथा मिलने जुलने की रीति न होने के

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सबसे बडे कारण में से जमात के साथ सलात (नमाज़) का छोड़ना है ।

ऐ मेरे मुसलमान भाई !

अपने पड़ोसी से बराबर मिला जुला करें, उनके साथ अच्छा व्यवहार से पेश आयें,उनकी खैर ख्वाही तथा शुभेच्छा करें । उन्हें नसीहत (उपदेश) करें ताकि आप की उम्र लंबी हो और आप कामिल तथा पूर्ण ईमान से सफल अथवा कामयाब हों, क्यों कि आपके कितने ऐसे पड़ोसी होंगे जो इस बात के इंतिज़ार(प्रतिक्षा) में होंगे कि आप उनका दरवाज़ा खट खटाऐं और उनकी खिदमत और सेवा में अपनी मुस्कान और सलाम का हदिया(उपहार) पेश करें ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दूसरा बयान : दो गुने फल एवं सवाब वाले अमलों तथा कार्यों द्वारा उम्र लम्बी करना।

उम्र लंबी करने के लिये बिना वासता बहुत मार्ग हैं जिन पर चलकर बहुत ही कम समय में भारी से भारी नेकियाँ कमाई जा सकती हैं इन मार्गों से मुराद वह आमाल और कार्य हैं जिन के करने पर कई गुना फल तथा सवाब मिलता है। यहाँ एक प्रश्न पैदा होता है कि उन कामों का फल व सवाब कैसे प्राप्त किया जा सकता है जिनके करने के लिए आपकी निश्चित उम्र से अधिक समय चाहिए ? ऐसा दो मार्ग अपनाने से हो सकता है :

पहला मार्ग : ऐसे अमलों और कामों की पाबन्दी करना जिनकी नेकियाँ कई गुना हैं।

दुसरा मार्ग : ऐसे कामों की पाबन्दी जिनका फल व सवाब मरने के बाद भी जारी रहता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पहला मार्ग : ऐसे अमलों और कामों की पाबन्दी करना जिन की नेकियाँ कई गुना हैं। इसमें दस शाखायें है :

पहली शाख : सलात (नमाज़)

1- दोनों हरम शरीफ में अधिक से अधिक सलात (नमाज़) अदा करना :

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया :

صَلاةٌ فِي مَسْجِدِي هذا أَفْضَلُ مِنْ أَلْفِ صَلاةٍ فِيمَا سِوَاهُ إِلا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ ، وَصَلاةٌ فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَفْضَلُ مِنْ مِائَةِ أَلْفٍ فِيمَا سِوَاهُ. "

[मेरी इस मस्जिद में एक समय की सलात (नमाज़) अदा करना मस्जिदे हरम (काबा) के सिवा दूसरी मस्जिद की बनिस्बत(अपेक्षा) एक हज़ार सलात(नमाज) से अफज़ल एवं सर्वोत्तम है, और दूसरी मस्जिदों की बनिस्बत(अपेक्षा)

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मस्जिदे हरम(काबा) में एक समय की सलात(नमाज़)अदा करना एक लाख सलात (नमाज़) से अफज़ल एवं सर्वोत्तम है] मुस्नद अहमद

अगर आप प्रति दिन 12 रकात सुन्नते मोअक्कदा की पाबंदी करने वालों में से हैं तो पूरे एक वर्ष में इन की कुल रकात चार हज़ारत तीन सौ बीस (4320) होती है । [12×360=4320]

अब अगर आप अपने देश में सुनने रवातिब के दो लाख रकात का सवाब प्राप्त करना चाहते हैं तो कम से कम इसके लिए आपको 46 वर्ष चाहिए और हरम शरीफ में दो रकात सलात(नमाज़) अदा करने में चन्द मिनट से अधिक नहीं लगें गे जबकि यही दोनो रकातें

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तुम्हारे लिए दो लाख रकात का सवाब बढ़ा देगी।

अगर आप ने हरम मक्की में दस रकातें पढ़ीं जिन को अदा करने में अधिक से अधिक 15 मिनट चाहिए और आपके लिए दस लाख रकात का सवाब लिखा गया इतना सवाब प्राप्त करने के लिये आप को अपने देश में दो सौ इकतिस (231) साल तक सुनने मोअक्कदा की पाबन्दी ज़रूरी होगी।

(2) मस्जिद में जमाअत के साथ सलात (नमाज़) की पाबंदी

अबु हुरैरा रज़ियल्लाह अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया :

صلاة مع الإمام أفضل من خمس وعشرين صلاة يصليها وحده

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

[इमाम के साथ एक समय की सलात (नमाज़) अकेला 25 सलात(नमाज़) से अफज़ल है] सहीह मुस्लिम /5/152

अगर आप हर फर्ज़ सलात(नमाज़) जमाअत के साथ मस्जिद मे अदा करें तो एक वर्ष में उतना अजर व सवाब प्राप्त कर सकते हैं जितना घर में अकेला फर्ज़ सलात(नमाज़) अदा करने वाला आदमी 25 या 27 वर्ष में प्राप्त करता है।

इस से किसी मुसलमान औरत को मायूसी (निराशा) नहीं होनी चाहिए कि वह इस कई गुना अजर व सवाब से महरूम है क्योंकि उस हदीस के मुताबिक जिसे उम्मे हुमेद रज़ियल्लाह अन्हा ने बयान किया है औरत का घर मे सलात(नमाज़)अदा करना मस्जिद में अदा करने से सर्वोत्तम तथा अफज़ल है। [उम्मे हुमेद नबी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आयीं और पूछा ऐ अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मैं आप के साथ सलात (नमाज़) अदा करना पसंद करती हूँ, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया : मुझे यकीन एवं विश्वास है कि तुम मेरे साथ सलात (नमाज़) पढ़ना पसन्द करती हो, परन्तु तुम्हारा कमरे के किसी कोने में सलात (नमाज़) पढ़ना घर में सलात (नमाज़) पढ़ने से बेहतर है । और तुम्हारा घर में सलात (नमाज़) पढ़ने से घर के किसी कमरे में सलात (नमाज़) पढ़ने से बेहतर है, और तुम्हारा घर में सलात (नमाज़) पढ़ना पड़ोस की मस्जिद में सलात (नमाज़) पढ़ने से मेरी मस्जिद में सलात (नमाज़)पढ़ने से बेहतर है ।]
(इसे इमाम अहमद, तबरानी और इबने खुज़ैमा ने रिवायत(बयान)किया है और अल्लामा अल्बानी रहमतुल्लाह अ़लैह ने सही कहा है)

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

(3) घर में नफ़्ल अदा करना

सुहैब रोमी रज़ियल्लाह अन्हु बयान करते अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया :

"صَلاةُ الرَّجُلِ تَطوُّعًا حَيْثُ لا يَرَاهُ النَّاسُ تَعْدِلُ صَلاتَهُ عَلَى أَعْيُنِ النَّاسِ خَمْسًا وَعِشْرِينَ. "

[लोगों की निगाहों से छुपकर सलात (नमाज़) अदा करना लोगों के सामने 25 बार सलात (नमाज़) अदा करने के बराबर है]सहीहुल जामेअ/ 3821

यानी अगर कोई मस्जिद में नफ़्ली सलात (नमाज़) अदा करके नेकियों का जो गट्ठर (कुल योग)25 वर्ष में प्राप्त कर सकता है उतनी नेकी आप इस नफल को घर में अदा करके एक वर्ष में प्राप्त कर सकते हैं, और जितनी अल्लाह के लिए नियत खालिस तथा निर्मल होगी उतना ही फल एवं सवाब अधिक

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

होगा, अतः आप अपने अन्दर एखलास पैदा करके अपनी कुछ नफली सलात(नमाज़)अपने घर में भी अदा किया करें क्यों कि इस में बहुत बड़ा लाभ और भलाई है ।

4- जुमा सलात(नमाज़)के कुछ आदाब अपनाना :

जुमा के दिन के कुछ अहम नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बताये हुये आदाब हमारे विषय (उम्र लंबी) करने से संबन्धित हैं जिन्हें ओस सक़फ़ी ने एक हदीस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान किया है :

من غسل يوم الجمعة واغتسل ، ثم بكر وابتكر ، ومشى ولم يركب ، ودنا من الإمام فاستمع ولم يلغ كان له بكل خطوة عمل سنة، أجر صيامها وقيامها

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

[जिसने जुमा के दिन अच्छे प्रकार से स्नान किया फिर सुबह सुबह पहली घड़ी में बिला सवारी पैदल मस्जिद गया, इमाम के करीब बैठा, ध्यान से खुतबा सुना और कोई व्यर्थ तथा बेकार कार्य नहीं किया तो उसे हर कदम (पग) के बदले एक वर्ष सौम (रोज़ा) और एक वर्ष क़ियामुल लैल (रात में खड़े होकर इबादत करना)का सवाब मिलता है]सहीहुल जामेअ/ 6405
आप थोडा विचार करें अगर आपने इन कामों को किया और आपके घर और जामे मस्जिद के बीच कम से कम एक हज़ार कदम की दूरी है तो अल्लाह तआ़ला आपके लिये एक हज़ार वर्ष का सियाम (रोज़ह)तथा क़ियाम का सवाब लिखे गा जिसमें कोई पाप और बुराई न होगी। एक पत्नि अपने पति को हर हफता इन आदाब के अपनाने पर उभार कर इस सवाब में मर्दों के साथ शामिल हो सकती है क्योंकि भलाई पर

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उभारने वाले को वही सवाब मिलता है जो भ लाई करने वाले को मिलता है ।

[अनुवादक : जबकि तीन जुमा छोड़ने वाले के दिल पर अल्लाह तआ़ला मोहर लगा देता है अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया :

مَنْ تَرَكَ الْجُمُعَةَ ثَلاثَ مَرَّاتٍ تَهَاوُنًا طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قَلْبِهِ"

(जिस ने लापर्वाही से तीन जुमा छोड़ दिया तो अल्लाह तआला उसके दिल पर मोहर लगा देता है]सहीहुल जामेअ /6143

5- ज़ोहा सालात की पाबन्दी

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फर्माया है :

(ابن آدم ستون وثلاثمائة مفصل، على كل واحد منها في كل يوم صدقة، فالكلمة الطيبة يتكلم بها

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

الرجل صدقة، وعون الرجل أخاه على الشيء صدقة، والشربة من الماء صدقة، وإماطة الأذى عن الطريق صدقة)

[आदमी के शरीर में 360 जोड़ हैं उन में से हर जोड़ पर प्रतिदिन सदका(दान) है, चुनांचे आदमी का अच्छी बात बोलना सदका (दान) है,किसी चीज़ पर अपने मुसलमान भाई की सहायता सदका है, पानी का एक घूँट पिलाना सदका (दान) है, मार्ग से दुख पहुँचाने वाली चीज़ का हटाना सदका (दान) है] सहीहुल जामेअ़/ 42

ज़रा ध्यान दें इतने सदके (दान) प्राप्त करने के लिए आप को कितना समय उपलब्ध होना चाहिए ?

अगर आप प्रतिदन ज़ोहा की सलात पढ़ा करें तो आप प्रतिदिन जिस्मानी कर्ज़ की अदायेगी होती रहे गी साथ ही साथ समय की बचत भी होगी ।ज़रा विचार करं इसमें कितनी बड़ी दया

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

है । अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फर्माया :

[तुम्हारे शरीर के हर जोड़ पर सदका (दान) है चुनांचे हर बार **سبحان الله** सुबहानल्लाह कहान सदका (दान) है हर बार **الحمد لله** अल् हमदु लिल्लाह कहना सदका(दान) है, हर बार **لا إله إلا الله** ला इलाहा इल्लल्लाह कहना सदका(दान) है, हर बार **الله أكبر** अल्लाहु अक्बर कहना सदका (दान) है, भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना सदका (दान) है और इन सारी चीज़ो से ज़ोहा सलात की दो रकात काफी होगी] सहीह मुस्लिम/ 5/23

ज़हा सलात का सबसे उचित समय सूरज ऊपर होने के बाद जब गरमी तेज़ हो जाए ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फर्माया :

صلاة الأوابين حين ترمض الفصال

[अव्वाबीन की सलात उस समय है जब गर्मी से ऊँट के छोटे बच्चों के खुर जलने लगें] सहीह मुस्लिम/ 6/29

दूसरी शाख : हज और उमरा

अगर किसी मुसलमान के बारे में कहा जाये कि उसने 60 बार हज किया है तो इसका मतलब यह होगा कि उसकी उम्र साठ से कम नही है, परन्तु यह हो सकता है कि हमारे हज तथा उमरा की संख्या हमारी उम्र से अधिक हो जाये ? जी हाँ । वह आमाल(कार्य) जिनका सवाब हज या उमरा के बराबर होता हैं उनके अपनाने से हज तथा उमरा का सवाब मिल सकता है । इसके कुछ उदाहरण निम्न लिखित हैं ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

1- ताकत अनुसार अपने धन से हर साल लोगों को हज कराना :

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अधिक से अधिक हज और उमरा करने का शौक दिलाया है जैसा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फर्माया :

تَابِعُوا بَيْنَ الْحجِّ وَالْعُمْرَةِ ، فَإِنَّهُمَا يَنْفِيَانِ الْفَقْرَ وَالذُّنُوبَ ، كَمَا يَنْفِي الْكِيرُ خَبَثَ الْحَدِيدِ والذهب والفضة

[बार बार हज और उमरा करो क्योंकि ये दोनो मुहताजी और गुनाह को ऐसे ही समाप्त करते हैं जैसे कि भट्टी चाँदी,सोना और लोहे के ज़ंग(मुर्चा) को समाप्त करती है]सही सुनने त्रिम्ज़ी/ 650

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मुस्लिम बिन यसार जो एक ज़ाहिद (मुत्तकी परहेज़गार) और फकीह थे हर साल स्वयं हज करते और अपने साथ कुछ मुसलमान भाईयों को भी हज कराते थे। ऐसा ही अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाह अलैह के बारे में भी मशहूर (प्रसिद्ध) है।

अतः अगर आप हर साल तीन आदमियों को हज कराएं तो आप को हर साल तीन हज करने का सवाब मिलेगा, गोया आपने अपनी उम्र में तीन वर्ष बढ़ा लिया जिस में आपने हर साल हज किया :

2- इशराक की सलात :

नबि-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फर्माया है :

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

من صلى الغداة في جماعة، ثم قعد يذكر الله حتى تطلع الشمس، ثم صلى ركعتين كانت له كأجر حجة وعمرة.تامة تامة تامة.

[जिसने जमाअत के साथ फर्ज सलात (नमाज़)अदा की फिर सूर्य उदय होने तक अल्लाह का ज़िक्र व अज़कार करता रहा फिर दो रकात सलात (नमाज़) अदा किया तो उसे एक मुकम्मल हज और उमरा का सवाब मिलेगा] सहीह सुनने तिर्मज़ी/ 480

आज इस सुन्नत पर बहुत ही कम लोगों का अमल है इस लिए एक मुसलमान को चाहिए कि वह ऐसे साधान अपनाये जो इन सवाब वाले कामों के लिये सहयोगी हों जैसे इशा के बाद जल्दी सो जाना | इसी प्रकार इस फज़ल को प्राप्त करने की लगन तथा हौसला भी होनी चाहिये चाहे हफते के अन्त में एक ही बार क्यों न हो, जिस समय कि इस के पास

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कोई काम काज न हो, ताकि वह हज और उमरा का सवाब प्राप्त कर सके। गोया उसे एक साल की उम्र मिल गई जिसमें उसने हज और उमरा किया।

3- मस्जिदों के धार्मिक सभाओ(दीनी परोग्रामों)और तक़रीरी प्रोग्रामों में भाग लेना।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फर्माया :

من غدا الى المسجد لا يريد إلا أن يتعلم خيراً أو يعلمه كان كأجر حاج تاماً حجته

[जो मस्जिद में केवल कोई भली बात सीखने या सिखाने के लिए जाये तो उसके लिए

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मुकम्मल हज के बराबर अजर (बदला)तथा सबाब है]सहीह अल-तरगीब वल-तरहीब /82

अतः एक मुसलमान को चाहिए कि ऐसे धार्मिक सभाओं और दीनी एवं इल्मी प्रोग्रामों में भाग लेते समय अपनी नियत यही रखे जब कि बहुत से लोग ऐसे खैर तथा भलाई के प्रोग्रामों में भाग लेने से यह तर्क तथा दलील बनाकर लापरवाही करते हैं कि हम केसिट आने के बाद सुन लेंगे। इसी प्रकार उलमाए दीन को भी चाहिए कि वह अपना इल्मी प्रोग्राम मस्जिद ही में करें ताकि स्वयं उन्हें और जो भी उनकी तकरीर तथा भाषण सुनने के लिए आये उसे यह अजर एवं सवाब मिले हो।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

4- रमज़ान के महीने में उमरा करना।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अन्सार की एक औरत से जिनका नाम उम्मे सिनान था फर्माया :

مَا مَنَعَكِ أنْ تكوني حججت معنا ؟ قالت: ناضحان كانا لأبي فلان- زوجها- حج هو و إبنه على أحدهما،وكان الآخر يسقي عليه غلامنا،قال-فعمرة في رمضان تقضي حجة أو حجة معي-

[आप को मेरे साथ हज करने से किस चीज़ ने रोक दिया ? तो उन्होंने कहा : मेरे पति अबु फुलान के पास केवल दो ऊँटनियाँ थी इन में से एक पर उन्हों ने और उनके बेटे ने हज किया और दूसरी से मेरा गुलाम सिंचाई करता था तो आप स्ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फर्माया : रमज़ान में उमरा हज के बराबर है

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

या मेरे साथ हज के बराबर है]सहीह बुखारी/ 3/705

इस लिए ऐ मेरे मुसलमान भाई ! आप को ये अवसर नही खोना चाहिए चाहे आप एक घन्टा में उमरा करके अपने शहर लौट आयें ।

5 - मस्जिद में फर्ज़ सलात (नमाज़) की अदायेगी.

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्मायाः

"مَنْ مَشَى إِلَى صَلاةٍ مَكْتُوبَةٍ فِي الْجَمَاعَةِ فَهِيَ كَحَجَّةٍ ، وَمَنْ مَشَى إِلَى صَلاةِ تَطَوُّعٍ(يعنى صلاة الضحي) فَهِيَ كَعُمْرَةٍ نافلة

[जो जमाअत के साथ फर्ज़ नमाज़ की अदायेगी के लिए गया तो उसे एक हज के बराबर सवाब मिलेगा, और जो किसी नफली

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नमाज़(यानी. ज़ोहा की नमाज के लिए गया तो उसे एक नफ़ल उमरा के बराबर सवाब मिलेगा]अल्लामा अल्बानी रहमतुल्लाह अलैह ने सहीहुलजामेअ/ 6556में इसे हसन कहा है

इस लिए हर आदमी जो सलात (नमाज़) के लिए निकलने से पहले वज़ू की पाबंदी करे और बराबर मस्जिद में जमाअत के साथ सलात (नमाज)अदा करे तो वह रोज़ाना अल्लाह तआ़ला की एजाज़त से 5 हज करने का सवाब पायेगा । यानी हर साल 1800 हज,ज़रा आप ख्याल करें कि दस साल में कितने हज का सवाब मिल जायेगा !यह इस उम्मत पर अल्लाह तआ़ला का बहुत बड़ा एहसान एवं दया है कि इसे कम उम्र दिया मगर नेकियाँ कई गुना बढ़ा दी, कोई भी सलात (नमाज़) अदा करने वाला अपने घर से वज़ू करके निकले तो वज़ू उसके सारे पापों को धुल देता है, इसके लिए मोतय्यन(नियुक्त) फरिश्ते रहमत

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

(कृपा) की दुआ और बखशिश एवं क्षमा माँगते हैं .मस्जिद की ओर एक कदम के बदले उसका रुतबा बलन्द होता है और एक पाप मिटता है, अगर वह पहली सफ (पंक्ति) में पहुँच जाये तो उसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ओर से तीन बार इस्तिगफार (क्षमायाचना)नसीब होता है साथ ही साथ अल्लाह ताआ़ला उस पर दया प्रदान करता है इसके लिए फरिश्ते रहमत तथा दया की दुआ़ और प्राथना करते हैं, कम से कम एक सलात (नमाज़) में इसके चार गुनाह(पाप) मिटा दिये जाते हैं, अतः हज का सवाब ओर फल भी पाता है, इसके अतिरिक्त बहुत सारे ना मालूम अजर व सवाब से माला माल होता है। लेहाज़ा जो इन उपरोक्त चीज़ों के सम्बंध में लापरवाही बरते इस का उदहरण उस मुर्ख से कहीं अधिक बुरा है जो अपने माल को बर्बाद कर रहा है, बल्कि इससे अधिक मलामत तथा

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

निन्दा के लायक है । मस्जिदों से दिली लगाव(हार्दिक संबन्ध) कायम करने का सबसे मुख्तसर तरीका उस अजर व सवाब की जानकारी है जो अल्लाह तआ़ला ने सलात (नमाज़) अदा करने वालों के लिए रखा है ।

6 - कुबा मस्जिद में सलात (नमाज़) पढ़ना ।

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फर्माया :

مَنْ تَطَهَّرَ فِي بَيْتِهِ، ثُمَّ أَتَى مَسْجِدَ قُبَاءٍ، فَصَلَّى فِيهِ كَانَ لَهُ كَأَجْرِ عُمْرَةٍوفي رواية النسأئى- مَن خَرَجَ حَتَّى يَأتِى هَذَا المَسجِد مَسجِدَ قُبَاء فَصلَى فِيهِ كَانَ لَهُ عَدلُ عُمرَة

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

[जो व्यक्ति अपने घर से वज़ू करके मस्जिद कुबा आये और इसमें सलात(नमाज़) पढ़े तो उसके लिए एक उमरा जैसा सवाब है]और सुनने नसई की एक रवायत में है[जो व्यक्ति इस मस्जिद यानी मस्जिदे कुबा आये और उसमे सलात पढ़े तो उसके लिए एक उमरा के बराबर सवाब है] सहीह अलजामेअ/ 6/54 **इस लिए जब भी आप** मस्जिद नबवी की ज़्यारत के लिए सफर करें तो अधिक से अधिक मस्जिदे कुबा में नमाज़ पढ़े ।

तीसरी शाख : आप मुअज़्जिन बनें या मुअज़्जिन के अज़ान का जवाब दें ।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम ने अपने सहाबए किराम को मुअज़्जिन और अज़ान की बहुत सारी फज़ीलत(प्रमुखता) बताई हैं यहाँ तक कि एक सहाबी आप के पास

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आकर पूछने लगे कि उन्हें वह रुतबा कैसे मिले जिस से मुअज़्जिन लोग सफल हुए हैं,तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया :

قل كما يقولون فإذا انتهيت فسل تعطه

[वैसे तुम कहो जैसा वह कहते हैं,और जब कह चुको, तो अल्लाह से माँगो तुम्हें वह चीज़ मिलेगी]

यानी अज़ान का जवाब दो सिवऐ,हैय्याअलस्सलाह.हैय्य अलल फ़लाह के,इस अवसर पर लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह कहो तो तुम्हें भी उन्ही के समान सवाब मिलेगा] सहीह अलु जामा /4403

मुअज़्ज़िन को क्या अजर और सवाब मिलता है ?

निम्न लिखित हदीस शरीफ पर ध्यान दें ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान किया है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया :

"إِنَّ اللَّهَ وَمَلائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى الصَّفِّ الْمُقَدَّمِ ، وَالْمُؤَذِّنُ يُغْفَرُ لَهُ مَدَى صَوْتِهِ ، وَيُصَدِّقُهُ مَنْ سَمِعَهُ مِنْ رَطْبٍ وَيَابِسٍ ، وَلَهُ مِثْلُ أَجْرِ مَنْ صَلَّى مَعَهُ. "

[अल्लाह और उसके फरिश्ते पहली सफ(पंक्ति)वालों पर रहमत भेजते हैं, और मुअज़्ज़िन के लिए उसकी आवाज़ पहुँचने की सीमा तक क्षमा कर दिया जाता है, तथा उसकी तसदीक(पुष्टि) हर सूखी और गीली चीज़ करती है, तथा उसके लिए उस के साथ सलात (नमाज़) पढ़ने वालों के बराबर फल एवं सवाब है

इसे इमाम अहमद ने रिवायत किया है और अल्लमा अलबानी रहमतुल्लाह अ़लैह ने सही अल-तरगीब व अल-तरहीब 230-231में सही कहा है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

थोड़ा आप ध्यान दें ! अगर आपके मुहल्ले (प्रतिवास)की मस्जिद में सौ(100) लोग सलात(नमाज़) पढ़ने वाले हों और आप उस मस्जिद के मुअज़्ज़िन (अज़ान देने वाला) या अज़ान का उत्तर देने वाले हों तो आप को सौ सलात(नमाज़) पढ़ने वालों का सवाब मिलेगा । इसके अतिरिक्त वह सवाब भी मिलेगे जिन का बयान इससे पहले हो चुका यानी 27 सलात(नमाज़) तथा हज आदि का सवाब ।

अललाहके फज़ल तथा दया पर आपको आश्चर्य नहीं करना चाहिए बल्कि उन लोगों पर आश्चर्य करें जो इस भलाई से दूर रहते हैं ।

मेरे इस्लामी भाई ! क्या आप मुअज़्ज़िन (अज़ान देने वाले) के अज़ान का जवाब देंगें या प्रतिदिन पाँच बार आप से यह सवाब खोता रहेगा ? अगर लोग अल्लाह तआ़ला के इस महान दया तथा मेहरबानी को जान लें तो बिल्कुल अज़ान होते समय अपनी बातों और

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कामों में लगे नहीं रहेंगे, और इस अतिमूल्यवान(बहुत क़ीमती) फल को जान लेने के बाद अज़ान सुनते समय उसका आदर करने लगेंगे, इसी प्रकार बच्चे भी अपने पिता दादा के मार्ग पर चलेंगे , क्यों कि अज़ान इस्लाम के प्रमुख नीति तथा खुली निशानी में से है ।

एक मुसलमान औरत भी यह बड़ा सवाब प्राप्त कर सकती है इस लिए अगर औरत भी मुअज़्जिन (अज़ान देने वाला)के अज़ान का जवाब दे तो उसे भी वही सवाब मिलेगा जो मुअज़्जिन को मिलता है यानी नमाज़ पढ़ने वालों की संख्या के बराबर हज का सवाब पायेगी जबकि वह मर्दों के साथ मस्जिद में नमाज़ न पढ़े, हैज़ तथा निफास में भी औरत इस सवाब सें महरूम नहीं रहेगी । हर प्रकार की दया और प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसने अपने इस अपार एवं बेपायाँ दया और करम से निवाज़ा ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

चौथी शाख : सियाम (रोज़े)

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने सभी सहाबा रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम को पूरे साल में चाहे शरदऋतु(शर्दी)हो या उष्णऋतु(गरमी का मौसम) नफली रोज़े की प्रलोभन तथा शौक़ दिलाया है और सर्वोत्तम तथा सबसे अफज़ल नफ़ली सौम(रोज़ा) उस आदमी के सौम(रोज़ा) को कहा है जो अपनी आधी ज़िन्दगी सौम(रोज़ा)रखे जिसे दाऊद अलैहिस्सलामकासौम(रोज़ा)कहते हैं । अर्थात एक दिन सौम(रोज़ा)रखना दूसरे दिन न रखना ।
हम कुछ दिनों के नफ़ली सौम(रोज़ा) रखकर उनका सवाब प्राप्त करके अपनी उम्र कई वर्ष लंबी कर सकते है । इस के कुछ उदाहरण निम्न में हम लिख रहे हैं ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

1 : विशेष दिनों के सौम(रोज़ा)

एक वर्ष में रमजान के महीने के अतिरिक्त अगर आप 42 दिन सौम(रोज़ा) रखते हैं तो आप को 720 दिन यानी दो वर्षों का सवाब मिलता है । निम्न लिखित कार्य करने से थोड़ी कठिनाई में पूरे वर्ष का सवाब प्राप्त हो सकता है ।

: रमजान के बाद शव्वाल के 6 सौम(रोज़े) की पाबंदी

अल्लाह के रसूल सल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया है :

"مَنْ صَامَ رَمَضَانَ ثُمَّ أَتْبَعَهُ ستا مِنْ شَوَّالٍ كان كصيام الدَّهْر كله

[जिस आदमी ने रमज़ान के सौम(रोज़े) के बाद शव्वाल के 6 रोज़े रखा तो ऐसा

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मानो कि उसने पूरे वर्ष सौम(रोज़ा) रखा]सहीह मुस्लिम /8/56

: अय्यामे बीज़ के रोज़े की पाबंदी

अरबी महीने के हिसाब से 13-14-15 तारीख का सौम(रोज़ा) ।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया :

صيام ثلاثة أيام من كل شهر صيام الدهر : أيام البيض صبيحة ثلاث عشرة وأربع عشرة وخمس عشرة

[हर महीने में तीन दिन का सौम(रोज़ा) पूरे वर्ष के सौम(रोज़ा) के बराबर है,और अय्यामे बीज़ 13-14-15 की तारीख है](इसे अल्लामा अल्बानी रहमतुल्लाह अ़लैह ने सही अल्जामेअ़ 3849 में हसन कहा है)

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

या पूरे महीने में अपनी पसन्द अनुसार (उन दिनों के अतिरिक्त जिस दिन सौम(रोज़ा) रखना मना है जैसे केवल जुमा के दिन या केवर्ल शनिवार के दिने) किसी भी दिन का सौम(रोज़ा) |

क्योंकि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फर्माया है :

من صام من كل شهر ثلاثة أيام فذلك صيام الدهر فأنزل الله عز وجل تصديق ذلك في كتابه ﴿مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا﴾ اليوم بعشرة أيام

[जिसने हर महीने में तीन दिन सौम(रोज़ा) रखा तो यह पूरे वर्ष के रोज़ा सौम(रोज़ा)के बराबर है | और अल्लाह तआ़ला ने इसकी तसदीक(पुष्टि)अपनी किताब में की है (जो नेक काम करेगा उसे उसके दस गुना मिलेंगें)सूरह एनाम : 160

एक दिन दस दिन के बराबर]

अल्लामा अल्-बानी रहमतुल्लाह अ़लैह ने सहीह तिरमिज़ी 609 में इसे सही कहा है |

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इस लिए अगर आप इन दिनों के सौम(रोज़ा) की पाबन्दी करते हैं तो अन्त में आप हर वर्ष में दो वर्ष के रोज़े का सवाब पायें गे जो आप की उम्र से कई वर्ष अधिक होंगे ।

बस थोडा आप ध्यान दें!

2 - सौम(रोज़े)रखने वालों को इफतार कराना।

अगर आप एक दिन के सौम(रोज़ा) का सवाब चाहते हैं तो ज़रूरी है कि आप उस दिन सौम(रोज़ा) को तोड़ने वाली चीजो से बचें ।

अब आप बतायें ?

क्या आप कई रोजेदार को इफतार करा के एक ही समय कई दिनों के सौम(रोज़ा) का सवाब कमाना चाहते हैं ?

अललाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया :

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

من فطر صائما كان له مثل أجره غير أنه لا ينقص من أجر الصائم شئ

[जिसने किसी सौम(रोज़ा) रखने वाले को इफतार कराया तो उसे सौम(रोज़ा)रखने वाले के सवाब में से कमी किये बिना उसके सौम(रोज़ा)के बराबर सवाब मिलेगा]अल्लामा अल्बानी रहमतुल्लाह अ़लैह ने सही अल्जामोअ़ -64/5 में इसे सही कहा है।

क्या आप नहीं चाहते हैं कि आप के लिए कम से कम उस आदमी के सौम(रोज़ा)का सवाब लिखा जाये जो सौमे दाऊद रखता है ? और यह उस समय होगा जब आप हर वर्ष 180 आदमी को इफतार करायें जो कि आधे वर्ष के बराबर है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पाँचवी शाख : शबेक़द्र(बरकत वाली रात)में क़ियामुल्लैल करना :

रमज़ान की अन्तिम दस रातों में कियामुल्लैल (रात की सलात-नमाज़)की पाबंदी करें चाहे इस नेक काम के लिए आप को संसार के कुछ काम बाद में करने पड़ें ताकि आप शबे कदर में कियामुल्लैल पा सकें क्यों कि इस में कियामुल्लैल इतनी बड़ी तिजारत है जिस का संसार में कोई बदला ही नहीं।

अल्लाह तआ़ला के यहाँ कद्र वाली रात(शबे क़द्र)हज़ार महीनों की एबादत से अफज़ल तथा सर्वोत्तम है, अल्लाह तआ़ला ने फर्माया :

﴿ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ ﴾

[शबे कद्र(कद्र की रात) एक हज़ार महीनों से बेहतर है]सूरह कद्र /3

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अर्थात शबे कद्र(कद्र की रात) में कियामुल लैल का सवाब लगभग 83 वर्ष 3 महीना की एबादत के सवाब से बेहतर है, अतः एक बुद्धिमान मुसलमान इतना बड़े सवाब प्राप्त करने में कैसे कोताही करेगा ? हर मुसलमान को इस बात का हरीस तथा लोभी होना चाहिए कि वह शबे कदर्(कद्र की रात) में अल्लाह का ज़िक,अज़कार,तसबीह,तहमीद करने वाला, कुरआन करीम की तिलावत करने वाल, अललाह पाक की इबादत करने वाला, संसार तथा आखिरत की भलाई माँगने वाला बने।
इमाम फखरुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाह अ़लैह ने अपनी तफसीर में फर्माया है कि:

وَمَن أحيَا هَا فكَأنَما رُزقَ أعمَاراً كَثِيرَةً

(जिसने इसे ज़िन्दह रखा तो गोया उसे बहुत अधिक उम्र नसीब हुई) ।अल-तफसीर अलकबीर - राज़ी /32/31

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

औरशबे कद्र(कद्र की रात)की अहमियत तथा महत्व का बोध इससे भी होता है कि यह वह रात है जिसमें आपके आने वाले साल के भविष्य नियुक्ति होती है, अतः इसी में उम्र लिखी जाती है और सारे कामों का फैसिला होता है।

इसलिए ऐ मेरे मुसलमान भाई बहन !

आप शबे कद्र(कद्र की रात) बाज़ारों और बेकार कामों में गुज़ारने के बजाये आप इस रात नेक कार्य करें ताकि आप इतने बड़े सवाब से महरूम तथा असफल न रहें।

छठी शाख : जिहाद

लाभदायक उमर बढ़ाने के साधनों में से जान व माल(प्राण तथा धन) या इनमें से किसी एक द्वारा अल्लाह की राह में जिहादद्ध(धर्मयुद्ध)करना है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया :

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

"مَقَامُ الرَّجُلِ فِي الصَّفِّ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَفْضَلُ مِنْ عِبَادَةِ رَجُلٍ سِتِّينَ سَنَةً"

[अल्लाह की राह में आदमी का पहली पंक्ति में खड़ा होना अल्लाह तआ़ला के यहाँ एक आदमी की 60 वर्ष की एबादत से सर्वोत्तम तथा अफजल है]अल्लामा अल्बानी रहमतुल्लाह अलैह ने इसे सही अल जामेअ़ 5151में सहीह कहा है।

और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया :

"مَنْ رَابَطَ يَوْمًا و لَيْلَةً فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَانَ لَهُ كأجْرِ صِيَام شَهْرٍ أَوْ قِيَامهُ ، وَمَنْ مَاتَ مُرَابطًا جرَى لَهُ ذَلِكَ مِنَ الأجْرِ ، وَأَجْرَى عَلَيْهِ الرِّزْقَ وأمن الفتان.

[जिसने अल्लाह की राह में एक दिन और एक रात पहरे दारी की तो उसके लिये एक महीना क़ियामुल्लैल(तहज्जुद) और सौम(रोज़ा) का सवाब है, और जो भी पहरे दारी मे देहाँत पाया तो उसके लिए भी वही बदला है अतः उसे

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

रोज़ी एवं जीविका दिया जायेगा और वह कब्र में फितनों से सुरक्षित रहे गा]
सही मुस्लिम/ 13/61

इसलिए कम से कम आप अपने धन ही से जिहाद करें और दूसरों को इस आसान काम के ओर बुलायें । क्यों कि अल्लाह तआ़ला ने धन से जिहाद को प्राण से जिहाद पर प्रमुखता दी है, अल्लाह तआ़ला ने फर्माया है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ * تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

[ऐ ईमान वालो ! क्या मैं वह तिजारत बताऊँ जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचाले? अल्लाह तआ़ला पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने धन और अपनी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जानों से जिहाद करो । ये तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम में ज्ञान हो]सूरह सफ/ 9-10

सातवीं शाख : ज़िल्हिज्जह के शुरू के दस दिनों(अ़शरये ज़िल्हिज्जह) में नेक अमल ।

हमें मालूम होना चाहिए कि **ज़िल्हिज्जह के शुरू के दस दिनों(अ़शरये ज़िल्हिज्जह)** में जिस प्रकार का भी नेक काम हो कभी कभार जिहाद के कुछ दर्जों के सवाब पर भारी है । अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया :

"مَا مِنْ أَيَّامٍ الْعَمَلُ الصَّالِحِ فِيهَا أَحَبُّ إِلَى اللَّهِ مِنْ هَذِهِ الأَيَّامِ يَعْنِي أَيَامَ الْعَشْرِ ، قَالُوا : يَا رَسُولَ اللَّهِ ، وَلا الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ؟ قَالَ : " وَلا الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ إِلا رَجُلٌ خَرَجَ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ فَلَمْ يَرْجِعْ مِنْ ذَلِكَ بِشَيْءٍ.

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

[इन दस दिनों के बनिसबत(अपेक्षा) कोई दिन नहीं है जिस में नेक अ़मल तथा कार्य अल्लाह को अधिक महबूब हो,सहाबा किराम ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल ! अल्लाह की राह में जिहाद भी नहीं ? तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया : अल्लाह की राह मे जिहाद भी नहीं सिवय उस आदमी के जो अपनी प्राण एवं धन के साथ निकला हो और उस में कुछ लेकर वापस न हो] (यानी शहीद हो जाये) सहीह बुखारी/ 2/530

बहुत से लोग इस सच्चाई से बेखबर हैं कि ज़िल्हिज्जाह के शुरू के दस दिन रमज़ान के दिन से भी अफज़ल हैं, जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया :

أَفْضَلُ أَيَّامِ الدُّنْيَا أَيَّامُ الْعَشْرِ

[संसार के दिनों में सब से अफज़ल(सर्वोत्तम) दिन ज़िल्हिज्जह के शुरू के दस दिन हैं]अल्लामा

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अल्बानी रहमतुल्लाह अ़लैहे ने इसे सही अल जामेअ़ /1133 में सही कहा है

हमें इस बात का भी ज्ञान होना चाहिए कि जिल्हिज्जह के शुरू के दस दिनों को गनीमत (शत्रुधन)समझने के लिए हमें शैतान और नफ्स के ख्वाहिशात तथा मन की इच्छाओं से मिटने में अधिक कठोर कोशिश(प्रयास)करना होगा क्योंकि रमज़ान की तरह ज़िल्हिज्जह के शुरू के दस दिनों में शैतान को जकड़ा नहीं जाता। सईद बिन जुबैर रज़ि यल्लाह अन्हु ज़िल्हिज्जह के शुरू के दस दिन आरंभ होते ही कठोर प्रयास करते थे। इन दस दिनों में मिम्न लिखित कार्य करना उत्तम तथा पसंदीदह है।

1- हज करना और यह सबसे सर्वोत्तम तथा अफज़ल काम है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

2- सौम(रोज़ा) रखना और विशेष रूप हज पर न जाने वाले के लिए अ़रफा के दिन का 9 ज़िल्हिज्जह सौम(रोज़ा) रखना।

3- अधिक से अधिक अल्हमदु लिल्लाह, अल्लाहु अक्बर और लाइलाहा इल्लल्लाह कहना,अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया : अल्लाह के यहाँ इन दस दिनों के बनिस्बत(अपेक्षा) कोई दिन ऐसा नहीं जिस में नेक काम अल्लाह को अधिक पसंदीदह हो, इस लिए तुम इस में अधिक से अधिक अल्हमदु लिल्लाह, अल्लाहु अक्बर और लाइलाहा इल्लल्लाह कहो। इसे इमाम अहमद रहमतुल्ला अ़लैह ने बयान किया है)

[अल्लामा अलबानी ने इसे ज़ईफ अल-तरगीब व अल -तरहीब में ज़ईफ कहा है, अनुवादक]

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

4- कुर्बानी करना।

5- ऐसे कामों में समय बरबाद न करना जो लाभ दायक न हों।

अतः इन मुबारक एवं शुभ दस दिनों की घड़ियों को आप मनोरंजन और अल्लाह की एबादत से गफ़लत और लापरवाही में न खो दें क्यों कि ये संसार में सबसे अफज़ल एवं सर्वोत्तम दिन हैं इस लिए आप अपने आपको ऊपर लिखी गई अच्छी बातों से महरूम न करें क्यों कि हो सकता ये पुनः आप को कभी न मिलें।

अल्लाह पाक हम सब मुसलमान भाई बहनों को ऐसे बहुमूल्य समय को उन कामों में बिताने का अवसर प्रदान करे जिन से वह प्रसन्न होता है तथा उन कामों से बचाए जिन से वह अप्रसन्न होता है। आमीन

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आठवी शाख : कुर्आन मजीद की कुछ सूरतों की बार बार तिलावत करना।

आप थोडा समय यानी अधिक से अधिक आधे मिनट में तीन बार सूरह एख़लास की तिलावत करके एक कुर्आन खत्म करने का सवाब बल्कि करोड़ो नेकियाँ प्राप्त कर सकते हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा किराम से फर्माया :

أيعجز أحدكم أن يقرأ ثلث القرآن في ليلة؟ فشق ذلك عليهم وقالوا : أينا يطيق ذلك يارسول الله ؟ فقال (قل هو الله أحد) تعدل ثلث القرآن وقل يا أيها الكافرون تعدل ربع القرآن

[क्या तुम में से कोई एक रात में एक तिहाई कुर्आन नहीं पढ़ सकता ? ये बात सहाबा किराम को यह बात भारी लगी और बोल उठे कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

वसल्लम हम में से कौन इस की ताकत रखता है ? तो आप ने फर्मायाः

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ (कुल हुवल्लाहु अहद)एक तिहाई कुर्आन के बराबर है और قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ **(कुल या अय्युहल काफ़िरून)**एक चोथाई कुर्आन के बराबर है] अल्लामा अल्बानी रहमतुल्लाह अ़लैह ने सहीह अलजामेअ़/ 4405 में सही कहा है ।

याद रहे :

इन लाभदायक बातो के लिखने का मकसद केवल यह नहीं है कि आप की ज्ञान में बढ़ोतरी हो बल्कि सबसे बडा मकसद यह है कि आप इस पर चलैं तथा अमल भी करें ।

आप फुरसत या किसी चीज़ का इन्तेज़ार के समय बिना किसी की जानकारी के बार बार

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सूरह एख़लास पढ़ कर कई बार कुर्आन खत्म कर सकते हैं ।

अगर आप और अधिक सवाब प्राप्त करना चाहते है तो जो अन पढ़ हैं या कम पढ़े लिखे लोग है और कुर्आन खत्म करने का सवाब हासिल करना चाहते हैं आप उन्हें इस की रहनुमाई करके यह सवाब पा सकते है । अतः एक मुसलमान को ये भी मालूम होना चाहिए कि इस सूरह की बार बार तिलावत करना और इससे मुहब्बत करना इन शाअल्लाह उसके लिए जन्नत में जाने का कारण बनेगा । जैसा कि एक सहाबी से आप ने उस समय फर्माया जब उन्होंने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मैं इस सूरह

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ (कुल हुवल्लाहु अहद)से मुहब्बत करता हूँ तो आप ने फर्माया : तुम्हारा इस

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सूरह से मुहब्बत करना तुम्हें जन्नत में दाखिल करेगा) इसे अल्लामा अल्बानी रहमतुल्लाह अ़लैह ने सही त्रिम्ज़ी /2323 में सहीह कहा है ।

नवीं शाख : अधिक से अधिक ज़िक्र व अज़कार

क्या आप उन कई गुना वाले ज़िक्र व अज़कार को जानते हैं जिस की रहनुमाई एवं पथप्रदर्शन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने की है ? यह नेकियों का वह महा सागर है जिस से अधिक लोग अचेत तथा गाफिल हैं ।

पहला भाग : अल्लाह की ऐसी तसबीह (अल्लाह की पवित्रता का वर्णन) जिसका सवाब अनेक गुना हैं

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पहली हदीस : मोमिनों की माता जोवेरियह रज़ियल्लाहु अन्हा ने बयान किया है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनके पास से फजर नमाज़ पढ़ने के बाद निकले और यह मस्जिद में ही बैठी थीं तो आपने पूछा : क्या तुम बराबर इसी हालत में हो जिस पर मैने तुम को छोड़ा था ? तो उन्हो ने उत्तर दिया : हाँ । फिर नबी -ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया : मैने तम्हारे बाद तीन बार चार कल्में कहा है अगर उनको उन से तौला जाये जो तुमने सुबह से कहा है तो उसके बराबर होंगे :

سبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ عَدَدَ خَلْقِهِ وَرِضَا نَفْسِهِ وَزِنَةَ عَرْشِهِ وَمِدَادَ كَلِمَاتِه

[अल्लाह की मखलूक (रचना)की संख्या के हिसाब से, उसकी इच्छानुसरा उसके अर्श के वज़न के बराबर और उसके कलिमात की

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सियाही के बराबर मैं अल्लाह की हम्द (वेदन-प्रशंसा) के साथ उसकी पाकी एवं पवित्रता बयान करता हूँ] सहीह मुस्लिम ।17/44

इस उम्मत(समुदाय)पर अल्लाह तआ़ला का बहुत दया एवं एहसान है कि उसने हमें ऐसे मुख्तसर छोटे-छोटे जामेअ़ कल्मे सिखाये हैं जिसके बदले इतने असंख्य फल एवं सवाब लिखता है कि गिनने वाला गिन नहीं सकता, आप थोड़ा इस संसार में अल्लाह की मखलूक(रचना) की अनगिनत के बारे में तसव्वुर तथा कल्पना करें फिर ध्यान दें अल्लाह के अर्श की मिक़्दार(मात्रा) के बारे में जिसके बराबर इन शाअल्लाह नेकियाँ होंगी ! तो क्या आप इतनी बड़ी नेकीं एवं उपकार और ऐसी जामेअ़ तसबीह छोड़ें गें ? इस भारी सवाब के साथ साथ इस हदीस के फायदों में सें जहाँ अल्लाह तआ़ला की मखलूकात (रचनाओं)की

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

महिमा और महानता के बारे में ध्यान देना और उनके सामने(अत्यंततुच्छ) कमतरीन आदम की संनतान के बारे में एहसास पैदा करना है वहीं पर अल्लाह तआ़ला की अज़मत व किबरियाई (महिमा)के बारे में सोच विचार की आम दावत तथा आवाहन है जिसने इस मुरत्तब दुनिया (संपादित संसार)को रचा ।

दूसरी हदीस : अबु उमामह रज़ियल्ला अन्हु कहते है कि : नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें अपने दोनों ओंठ हिलाते देखकर पूछा ऐ अबू उमामह तुम क्या कह रहे हो ? मैंने उत्तर दिया : मैं अल्लाह का ज़िक्र तथा अल्लाह को याद कर रहा हूँ आपने फर्माया : क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बतालाऊँ जो दिन एवं रात अल्लाह का ज़िक्र करने से कहीं अधिक है ? तुम कहो :

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ مِلْءَ مَا خَلَقَ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ عَدَدَ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الأَرْضِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ عَدَدَ مَا أَحْصَى كِتَابُهُ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ مِلْءَ مَا أَحْصَى كِتَابُهُ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ عَدَدَ كُلِّ شَيْءٍ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ مِلْءَ كُلِّ شَيْءٍ،

ऐसे ही कलिमात से अल्लाह की तसबीह बयान करो फिर आपने फर्माया :तुम भी इन्हें सीख लो और अपने बाद वालों को भी सिखा दो) अल्लामा अल्बानी रहमतुल्लाह अ़लैह ने सही अलजामेअ़ /2615 में इसे सहीह कहा है ।

मैं बिना कोई नोट लगाये आप के लिऐ इस सवाब के मिकदार का अनुमान लगाने के लिऐ यह हदीस छोड रहा हूँ जिन्हें आप कई रात एवं दिन में ज़िक्र व अज़कार करकें प्राप्त कर सकते हैं, ताकि आप स्वयं ये सीखलें और अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के फरमान पर अमल करके अपने बाद दूसरों को सिखायें ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दूसरा भाग : ऐसा इस्तिग़फ़ार(क्षमायाचना) जिसका सवाब कई गुना है :

अगर आप एक ही दिन दस लाख नेकियाँ कमाना चाहते हैं तो इस हदीस पर अमल करें जिसमें नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया है :

[जिसने मोमिन मर्द और मोमिनह औरत के लिए इस्तिगफार (बखशिश माँगा) किया, तो अल्लाह तआ़ला हर मोमिन मर्द और हर मोमिनह औरत के बदले उसके लिए एक नेकी लिखे गा] अल्लामा अल्बानी ने सही अलज़ामेअ़ /6026में इसे हसन कहा है

हम ये जानते हैं कि आज मुसलमानो की संख्या एक हज़ार मिलयन 100 करोड़) से अधिक है अतः अगर आप उनके लिए इस्तिगफार करेंगे

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तो अल्लाह तआ़ला आप को उनकी संख्या के बराबर सवाब दे गा ।

ऊपर लिखी हुई हदीस में हमारे लिए बहुत सारी नसीहते और इबरतें है !

1- मुसलमानों के बीच ईमानी भाई चारगी के संबन्ध और तअ़ल्लुक की गहराई ।

2- जो आदमी केवल अपने लिए दुआ़ करता है और मात्र अपने आप को याद रखता है, अपने मुसलमान भाईयों को भूला रहता है वह घमन्डी और अनानियत पसंद तथा अहंकार आदमी है जिसने अपने आपको बहुत सी भ लाई और ने कियों से दूर कर रखा है ।

3- जो आदमी अपने किसी मुसलमान भाई के लिए उसके पीठ पीछे दुआ़ करेगा अल्लाह की अनुमति से अल्लाह तआ़ला की ओर से इस

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दुआ़ के कुबूल होने की ज़मानत होगी क्यों कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया है :

[अपनी भाई के लिए मुसलमान आदमी की दुआ़ जो उसके पीठ पीछे हो कबूल होती है, इसके सिर के पास एक ज़िम्मेदार फरिश्ता होता है, जब वह अपने भाई के लिए किसी भ लाई की दुआ़ करता है तो वह ज़िम्मेदार फरिश्ता कहता है : ऐ अल्लाह कुबूल करले और तेरे लिए भी इसी प्रकार है] सही मुस्लिम /17/50

अतः अगर आप अकलमंद(बुद्धिमान) हैं और चाहते हैं कि आप की दुआ़ कुबूल हो तो केवल अपने ही लिए न दुआ़ करें बल्कि आप अपने किसी मित्र या अपने घर वालों के लिए भी करें और उनके पीठ पीछे करें । ताकि इस पर अल्लाह का कोई फरिश्ता आमीन कहे और

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आपकी दुआ क़ुबूल हो और आप को दुनिया व आखिरत(संसार तथा प्रलय) की भलाई मिले।

तो क्या आप अपने नातेदारों. अपने अध्यापकों और अपने मित्रों को याद करके उनके लिए दुआ करेंगे ?

दस्वीं शाख : लोगों की जरूरतें पूरी करना।

कुछ लोग ऐसे पाये जाते है, विशेषतः शान व बान(प्रतिष्ठा) वाले तथा मालदार और धनी , कि जब उनके पास कोई ज़रूरत वाला ज़रूरत पूरी करने की आशा कर के आता है तो अपनी नाक भवँ चढ़ाने लगते है, जबकि वह नहीं जानते कि जो आदमी अपने भाई की ज़रूरत पूरी करेगा अल्लाह तआला उसकी ज़रूरत पूरी फर्माएगा, और अल्लाह तआला

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उस समय तक बन्दे की सहायता करता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद एवं सहयोग करता है ।अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक लम्बी हदीस में फर्माया है :

"أَحَبُّ النَّاسِ إِلَى الله أَنْفَعُهُمْ"

[अल्लाह तआ़ला के यहाँ लोगों में से सब से महबूब(प्रिय) वह आदमी है जो लोगों को सबसे अधिक लाभ पहुँचाने वाला हो, अल्लाह तआ़ला के यहाँ अमलों में सबसे प्रिय तथा पसंदीदह अमल एक मुसलमान के लिए खुशी का सामान उपलब्ध करना या उसकी कोई परेशानी तथा संकट टाल देना या उसका कोई क़र्ज़(ऋणि) अदाक र देना या उसकी भूख दूर कर देना और मेरा किसी अपने मुसलमान भाई के साथ उस की किसी ज़रूरत के लिए जाना मेरे नज़दीक एक महीना मस्जिद में ए़तिकाफ करने से अधिक प्रिय एवं पसंदीदह है, जिसने अपना

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गुस्सा (कोध) रोक लिया अल्लाह तआ़ला उसकी पर्दापोशी फरमायेगा जिसने गुस्सा(कोध)पी लिया जबकि वह अपने गुस्से को पूरा कर सकता था, अल्लाह तआ़ला प्रलय के दिन उसके दिल को आनन्द से भर देगा,अगर कोई अपने भाई के साथ उसकी ज़रूरत के लिये गया यहाँ तक कि उसकी जरूरत पूरी करदी तो अल्लाह तआ़ला उसके कदम(पग) को उस दिन दृढ़पग और साबित कदम रखे गा जिस दिन कदम काँपें गे, बदखुल्की तथा दुरव्यवहार अमल को ऐसे ही बरबाद करदेती हैं जैसे सिरका शहद को बरबाद कर देता है] अल्लामा अल्बानी रहमतुल्लाह अ़लैह ने सिलसिला सहीहा /906में इसे हसन कहा है।

अपने भाई की कोई ज़रूरत पूरी करने में कभी कभार आधे घण्टे से अधिक नहीं लगता जबकि इसके बदले आप के लिए एक महीना के

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एतिकाफ का सवाब लिखा जाता है । अब आप सोचें कि अगर आप अपने भाईयों,परिवार अपने पड़ोसियों और उन लोगों की जिन्हें पहचानते हैं या नहीं पहचानते हैं ज़रूरत पूरी करने लगें तो----------?

वहनौकरी करने वाला आदमी जिसके पास बहुत से लोग आते है और वह अपनी कार्यालय में उनकी सेवा और उनके कामों को पूरा करने के लिए बैठा है, अगर इस हदीस को सामने रखते हुए अपने अमल के सवाब की आशा रखे तो उसके लिए कितने वर्ष के एतिकाफ का सवाब लिखा जायेगा ज़रा सोचें ?

मुसलमानों ! अपने मुसलमान भाईयों की ज़रूरत पूरी करने की पूरी कोशिश करें विशेषतः उन लोगों की जो दुखजनक, खतरनाक घटनाओं और संकटों से जूझ रहे हैं,

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उन्हें इस्लाम दुश्मन संगठनों के शिकार के लिए न छोड़ दें कि वह उसकी कुछ इंसानी सहायता करके उनकी मुहब्बत पालें फिर धीरे धीरे उनके दीन तथा धर्म को बरबाद करदें और निश्चित रूप से यह जान लें जब भी किसी इबादत का लाभ आप के अलावा दूसरे को मिलेगा तो उसका सवाब भी बहुत ज़्यादह होगा बस आप उसका सवाब अल्लाह तआ़ला के यहाँ चाहें।

अबु हुरैरा रज़ियल्लाह अन्हु ने बयान किया है, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया :

الساعي على الأرملة و الْمِسْكِينِ كَالْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ، أَوِ الْقَائِمِ اللَّيْلَ ، الصَّائِمِ النَّهَارَ"

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

विधवा और मिस्कीन(निर्धन).कंगाल की मदद तथा सहयोग करने के लिए कोशिश करने वाला अल्लाह के मार्ग मे जिहाद करने वालों के समान है या रात मे क़ियामुल्लैल करने वाले, दिन में रोज़ा अर्थात सौम रखने वाले की तरह है ।सही बुखारी)

हमारे सल्फे स्वालिहीन अपने भाईयों की ज़रूरत पूरी करने में सबसे आधि चाक व चौबंद रहते थे :

- अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु पड़ोसियों की बकरीयाँ दूहा करते थे चुनांचह जब वह खलीफा (हाकिम) हुए तो एक औरत ने कहा कि हो सकता है अब न दूहें, तो अबु बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फर्माया क्यों नहीं, मेरी अल्लाह से दुआ़ है कि मेरी खिलाफत की

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ज़िम्मेदारी उन कामों से गाफिल न करदे जो मैं पहले किया करता था।

❁ उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु बेवाओं (बिधवा) का विशष ध्यान रखते थे चुनांचह रात में उनके लिए पानी भरते थे,इसी प्रकार जब अली बिन हसन रज़ियल्लाहु अन्हु देहाँत पाये तो उनकी पीठ पर रात में बिधवाओं के घरो तक पानी के मशकीज़े लाद कर पहुँचाने के बहु से निशान देखे गये।

❁ अबु वायल पडोस की औरतों और बिधवाओं के पास प्रतिदिन जाते थे और उनकी ज़रूरत की चीज़े और जो कुछ उनके लिए बेहतर होता था खरीद दिया करते थे।

❁ मुजाहिद ने फर्माया है कि : मैंने इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की सेवा करने के लिए

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एक यात्रा में उनके संग निकला तो वही मेरी अधिक सेवा करते थे |

हम बहुत से ऐसे लोगो के बारे में सुनते और देखते हैं कि वह अपने गुमान अनुसार अपने दोस्त ,मित्र बल्कि आम लोगों की सेवा की सआदतमंदी तथा सुशीलता प्राप्त करते है, परंतु वही अपने माता पिता और करीबी रिशतेदारों(निकटतम नातेदारों) की सेवा से मुहँ मोड़ते है, जबकि निःसंदेह यह ऐसी नाफर्मानी (अवज्ञाँ) है जिसका फल महाप्रलय से पहले संसार ही में बहुत ही खतरनाक,आशंका पूर्ण और भयानक है, यह संसार में बुरे बदले तथा उम्र की कमी का कारण है | अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फर्माया :

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

"مَا مِنْ ذَنْبٍ أَجْدَرُ أَنْ يُعَجِّلَ اللهُ لِصَاحِبِهِ الْعُقُوبَةَفِي الدُّنْيَا ، مَعَ مَا يُدَّخَرُ لَهُ فِي الآخِرَةِ ، مثل الْبَغِيِّ وَقَطِيعَةِ الرَّحِمِ"

[रिश्ते नाते काटने और बदकारी जैसे गुनाह की तरह कोई ऐसा गुनाह नहीं है कि जिसका करने वाला अल्लाह तआ़ला की ओर से उखरवी सज़ा(प्रलय के प्रकोप) के साथ साथ दुनियावी सज़ा भी जल्द पा जाये] सही तिर्मज़ी /2039

तीसरा बयान

ऐसे अमलों से उम्र लंबी करना जिनका सवाब करने के बाद भी जारी रहता है । अब तक जितने अमलों का बयान हो चुका है उनका सवाब कितना ही अधिक क्यों न हो हर हाल में मरने के तुरन्त बाद कट जाये गा । जब कि

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हमारी इच्छा है कि हमारी उम्र अधिक से अधिक लाभकारी (लाभदायक) हो औ हमारे पास ऐसी नेकियाँ हों जिनका सवाब अल्लाह की तौफीक एवं क्षमता से मरने के बाद भी जारी रहे, इस लिए हमारी ज़िम्मदारी बन जाती है, कि हम ऐसे अमलों की जानकारी प्राप्त करें ताकि मरने से पहले उन अमलों को कर सकें।

इस उम्मत(समुदाय)पर अल्लाह तआ़ला के आति दया में से एक एहसान तथा दया यह भी है कि अल्लाह तआ़ला ने इसकी रहनुमाई (मार्गदर्शन) ऐसे अमलों की ओर की है जिनका सवाब मरने के बाद जारी रहता है जैसा कि अबु उमामा बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है,नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया :

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

(तीन प्रकार के लोग ऐसे हैं जिनका सवाब मरने के बाद भी जारी रहता है :)

1- वह आदमी जो अल्लाह के मार्ग में मुसलमानो की रखवाली के लिए पहरेदारी की हालत में मरा हो |

2- वह आदमी जिसने किसी को कोई दीन का ज्ञान(इल्म) सिखाया तो उसका सवाब उस समय तक जारी रहेगा जब तक उस पर चला जायेगा|

3- वह आदमी जिसने कोई सदका जारियः(ऐसा दान जो लोगों के लिए लाभकारी हो) किया तो उसका सवाब उस समय तक जारी रहेगा जबतक वह सदका जारियह बाकी है |

4- वह अदमी जिसने कोई नेक संतान छोड़ा जो उसके लिये दुआ़ करे | सही अलजामे 877

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इस हदीस के अनुसार ऐसे अमलों को जिनका सवाब मरने के बाद जारी रहेगा निम्न लिखित चार शाखों में बाटा जा सकता है

पहली शाख : मुसलमानों की रखवाली के लिए पहरेदारी में देहांत पाना सलमान फारसी रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान किया है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया :

"مَنْ رَابَطَ يَوْمًا أَوْ لَيْلَةً فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَانَ لَهُ مِنَ الأَجْرِ صِيَامُ شَهْرٍ وْ قِيَامُهُ ، وَمَنْ مَاتَ مُرَابِطًا أُجْرَى لَهُ ذَلِكَ مِنَ الأَجْرِ ، وَأُجْرَى عَلَيْهِ الرِّزْقَ وأمن الفتنة،،

[जिसने 24 घंटा अल्लाह की राह में पहरेदारी की तो उस के लिए एक महीना सौम(रोज़ा) रखने और क़ियामुल्लैल करने के समान सवाब

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

होगा और जो आदमी पहरेदारी में मर गया तो उसके लिए भी वैसा ही सवाब होगा, अतः उसे रोज़ी दिया जाये गा और वह कब्र के फितने से बचा दिया जाये गा | सहीह मुस्लिम /13/61

आप ज़रा अनुमान लागयें कि केवल चौबीस घंटा मुसलमानों की रखवाली के लिए पहरेदारी करने का सवाब एक माहीना कियाम व सियाम (तहज्जुद तथा रोज़ा) का सवाब मिलता है, थोडा ध्यान दें वह सहाबा केराम जिन्होंने चौदह सौ वर्ष पहले जिहाद तथा युद्ध किया और पहरेदारी में देहांत पाये अब तक बल्कि क़ियामत (प्रलय) तक उनके लिए कितना सवाबलिखा जायेगा |

आईये हम उन बशारतों तथा सुसमाचारों के बारे में ध्यान दें जो अल्लाह की राह में पहरेदारी करते हुए शहीद होने वालों को दी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गई हैं ताकि आप भी उन्हीं लोगों में से हों चाहे उन्हें अपनी ज़कात एवं दान ही देकर ।

फुज़ाला बिन ओबैद रज़ियल्लाह अन्हो ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया :

(كُلُّ مَيِّتٍ يُخْتَمُ عَلَى عَمَلِهِ ، إِلاَّ الَّذِي مَاتَ مُرَابِطًا فِي سَبِيلِ اللهِ ، فَإِنَّهُ يُنْمى لَهُ عَمَلُهُ إِلَى يَوْمِ القِيَامَةِ ، وَيَأْمَنُ مِنْ فِتْنَةِ القَبْرِ)

[हर आदमी मरते ही उसके अमल का सिलसिला समाप्त हो जाता है, सिवाये उस व्याक्ति के जो पहरेदारी करते हुये अल्लाह की राह में वफात पाये चुनांचह उसके अमल को पाला और बढ़ाया जाता है और वह कब्र के फितना से बचा रहे गा]सहीह अलजामेअ़ /4562

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ऊपर लिखी गई हदीस से आप को यह मालूम हुआ कि केवल अल्लाह की राह में पहरेदारी करने वाले आदमी का अमल देहांत के बाद भी बढ़ता रहता है तो क्या आप भी इस बडे सवाब में भागीदार होना चाहते हैं जिस में पहले के नेक लोग एक दूसरे से बढ़ जाने की कोशिश करतें थे |

दूसरी शाख : सदकए जारिया

सदकए जारिया का अर्थ वह सदका है जो बराबर जारी रहे जैसे खैर व भलाई के लिए मुतअय्यन वक़्फ वगैरह और उसकी कई किस्में हैं।अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया : मोमिन का वह काम या वह नेकियाँ जो उसे मौत के बाद भी मिलती रहेगी वह दीनी इल्म है जो उसने सिखाया और फैलाया और जो नेक

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

संतान अपने बाद छोड़कर गया, वह क़र्आन जो किसी को दे दिया, या कोई मस्जिद बना दिया, या मुसाफिर खाना बना दिया या नहर खोदवा दिया,या कोई सदका जो उसने अपनी सेहत और ज़िन्दगी ही में अपने माल में से निकाल दिया तो ये उसे उस की मौत के बाद भी मिलेगा]सही अत्तरगीब व अत्तरहीब /74

अबु हरैरह रज़ियल्लाह अन्हु ही से बयान है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया : [बन्दह कहता है कि ये मेरा धन है ये मेरा धन है जबकि उसका धन केवल तीन है, जो खापीकर समाप्त कर दिया, या पहनकर पुराना कर दिया, या जो किसी को देकर उसका सवाब आखिरत के लिए जमा कर लिया, उसके अतिरिक्त जो कुछ है या तो खो जाने वाला है या वह लोगों के लिए छोड़ जाने वाला है] सहीह मुस्लिम /18/94

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

चुनांचह अगर आप सच्ची और वास्तविक मालदारी चाहते हैं तो अधिक से अधिक सदका करें और विशेषतः सदकए जारिया क्योंकि यही आपका असल धन एवं जायदाद है,उसके अलावा जो कुछ है वह आपका नहीं बल्कि आपके वारिसों का है ।

क्या आप उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो की तरह होना नहीं चाहते है ? जिन्होंने अपने धन से तीन बार जन्नत खरीदा यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्मा दिया कि :

" **مَا ضَرَّ عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ الْيَوْمِ** [आज के बाद उस्मान का कोई अमल उनके लिए हानिकारक नहीं हो सकता]सही अत्तिरमिज़ी /2920

अल्लाह तआ़ला ने एक मुसलमान को अपने माल में से एक तिहाई सदका करने की इजाज़त

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दी है जैसा कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया : "

إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ أَعْطَاكُمْ عِنْدَ وَفَاتِكُمْ ثُلُثَ أَمْوَالِكُمْ ، زِيَادَةً فِي أَعْمَالِكُمْ"

[अल्लाह तआ़ला ने तुमको मौत के समय तुम्हारे अमलों में ज़्यादती (अधिक्तर) के लिए एक तिहाई धन सदका करने की अनुमति (इजाज़त) दे रखी है]सहीह अलजामेअ/1721 जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फर्माया है कि : [रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा में से हर उस सहाबी नें वक़्फ (धर्मार्थ दान)किया है जिन्हें इसकी ताकत थी]मुगनी : इबने कुदामा रहमतुल्लाह अलैह /8/212 निसंदेह जो आदमी अपने लिए सदका एवं दान करेगा अल्लाह तआ़ला उसे अवश्य फल एवं सवाब देगा जैसा कि अल्लाह तआ़ला का फर्मान है :

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرًا وَأَعْظَمَ أَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

[और जो नेकी तुम अपने आगे भेजो गे उसे अल्लाह तआ़ला के यहाँ बेहतर से बेहतर और सवाब में बहुत ज़्यादह पाओगे, अल्लह तआला ही से माफी तथा क्षमा माँगते रहो सचमुच अल्लाह तआ़ला बख्शने वाला और मेहरबा है]सूरह मोज़म्मिल 20

अधिक से अधिक नेकियाँ प्राप्त करने के लिए आप तिजारती बुद्धि से सोचें कि कैसे आप अपने धन और समय से लाभ उठायें ताकि आपकी नेकियाँ अधिक हो जायें ? आप वैसे ही विचार करें जैसा तिजारती पेशा लोंग अपने दुनियावी कामों में सोचते रहते हैं कि कैसे कम खर्च कर के अधिक लाभ कमा सकते हैं आप को भी उन्हीं प्रकार सोचान चाहिए परंतु आप

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

की सोच आप की उखरवी(प्रलय) के मामले में हो, आप अपने रब से तिजारत क्यों नहीं करते हैं कि आपके अमल का सवाब दूसरों से अधिक हो ?

देखिए अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को इन्होंने केवल एक आदमी के लिए जो अपनी ज़रूरत लेकर उनके पास आया था मास्जिदे नबवी में अपने ऐतिकाफ को छोड़ दिया जिसमें एक नमाज़ का सवाब दूसरी मस्जिदों के हिसाब से एक हज़ार के बराबर है और उसके साथ उसकी ज़रूरत के लिए निकल गये, क्यों कि वह जानते थे कि लोगों की ज़रूरत पूरी करना मस्जिदे नबवी में मुकम्मल एक महीना ऐतिकाफ करने से बेहतर है । यही तिजारती मन है जिसके द्वारा मनुष्य बड़ा बड़ा सवाब तथा फल कमाता हैं जिनके करने में इख्तियार है ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तीसरी शाख : खैर तथा भलाई पर बच्चे की तरबियत

आपका नेक लड़का आपकी उम्र में बढ़ोतरी तथा आप की मौत के बाद आपकी नेकियों के बढ़ाने का साधन है अगर अल्लाह ने चाहा तो आपकी मौत के बाद भी आपके नेक लड़के के कारण आपकी नेकियों का सिलसिला समाप्त नहीं होगा,जैसा कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में है :(----------और नेक लड़का जो उसके लिये दुआ करे--------)

ऐ आदरणीय पिता !आपके अपने नेक लड़के की कीमत एवं मूल्य का अनुमान उस समय होगा जब आप कब्र में रखे जायेंगे और अपने अपने हक में अपने नेक लड़के की ओर से किये गये इस्तिगफार(क्षमायाचना),सदका और दान,हज, और दुआओं के सवाबों का तोहफा

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एक के बाद एक देखेंगे, उस समय आपकी इस्लामी तरबियत (शिक्षा देना), दीन की पाबंदी और नेक लोगों की संगत इख्तियार करने पर उसकी हिम्मत बढ़ाने का फल मिलेगा हाँ बुरा लड़का तो अधिकतर अपने पिता के बारे में यही सोचता रहता है कि पिता कितना धन व दौलत छोड़ कर गया है। **لا حول ولا قوة إلا بالله (लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह)**इस लिए आप अपने बेटे को अल्लाह तआ़ला की तौफीक से आखिरत का ज़खीर (भण्डार) बनाने के लिए अंथक कोशिश(अथक प्रयत्न) करें [अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया है : अल्लाह तआ़ला नेक आदमी के पद को स्वर्ग में बुलन्द फर्मायेगा तो वह कहे गा कि ऐ अल्लाह तआ़ला हमारे लिये ऐसा कैसे ? तो अल्लाह तआला जवाब देगा तुम्हारे लिए तुम्हारे लड़के के इस्तिगफार(क्षमायाचना) के करण से]सहीह अलजामेअ /1617

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

चौथी शाख : लोगों को दीनी शिक्षा देना लोगों को भली बात की शिक्षा देना उन अमलों में से है जिनका सवाब मरने के बाद भी जारी रहता है, और ये दो ज़रिये से हो सकता है।

क- दीनी इल्म (धार्मिक ज्ञान)फैलाना

फर्ज़ तथा अनिवार्य कामों के अदा करने के बाद उन बेहतर इबादतों में से जिनके द्वारा अल्लाह की कुरबत तथा निकटता प्राप्त की जा सकती है, दीन की तालीम हासिल करना और इसे सिखाना है ।

आप मेरे साथ थोड़ी देर तक उस उच्च स्थान वाले सहाबी अबु हुरैरा रज़ि यल्लाहु अन्हु के बारे में ध्यान दें जिन्होंने पाँच हज़ार से अधिक हदीस बयान की हैं जिसे बहुत सारे मुसलमान पढ़ते हैं, और उस सवाब के बारे में

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ध्यान दे जो कि अल्लाह की इच्छा से 1400 वर्ष से लेकर अबतक बल्कि प्रलय के दिन तक उन से कटा नहीं है और न ही होगा, इसी प्रकार उन ओलमा और मोहद्दिसीन (हदीस बयान करने वाले)के अजर व सवाब के सिलसिले में ध्यान दे जिन्होंने इन हदीसों की तदवीन की। चुनांचह हमेशा हमेश (सर्वदा) के लिए इल्म बाकी रखने का ज़रीया इसे लिखना और लोगों के लिए फैलाना है,अगर आप किताबें और लिटरेचर वगैरह नहीं लिख सकते तो आप उनका धन से सहयोग करें। और लोगों में निःशुल्क तथा मुफ्त तकसीम करें, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फर्माया है:

[जब इन्सान मर जाता है तो उसके अमल का सिलसिला खत्म हो जाता है सिवाय तीन चीज़ो के : सदकए जारीया, वह इल्म जिस से लाभ प्राप्त किया जाये और नेक लड़का जो उसके

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

लिए दुआ करे] सहीह मस्लिम /11/85

ख-अल्लाह तआला की ओर दावत देना :

इल्म फैलाने साधनों में से एक साधन अल्लाह की ओर दावत देना है जो नबीयो तथा रसूलों का पेशा एवं धन्धा है । अल्लाह तआ़ला ने फर्माया :

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِمَّنْ دَعا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صالِحًا وَقالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ

[और उस से अधिक अच्छी बात वाला कौन है जो अल्लाह की ओर बुलाये और नेक काम करे और कहे कि मैं सचमुच मुसलमानो में से हूँ]सूरह फुस्सिलत 33

अल्लाह की ओर आवाहन तथा दावत देने का बहुत बड़ा महत्व है जिस से दावत देने वाले

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

और जिन्हें दावत दी जा रही है दोनो लापरवाही में हैं, अगर आपने अल्लाह की ओर किसी की रहनुमाई की जिस से वह सच पर होगया तो आपको उसकी नमाज़,उसकी तसबीह तथा उसके सारे नेक कामों के प्रकार सवाब मिले गा, और अगर वही आदमी दूसरे को आवाहन एवं दावत देने लगा तो आप के लिए उन के सवाब के समान अच्छे कर्मो का फल है चाहे आप अपने कब्र में हों । अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया है : [जिसने किसी हिदायत की ओर बुलाया, तो उसे इतना सवाब मिलेगा जितना उसकी पैरवी करने वाले को मिलेगा, जबकि उनके सवाब में से कुछ भी कम न होगा,और जो आदमी किसी गुमराही तथा पथभ्रष्टता की ओर बुलाये गा तो उसे उतना पाप मिलेगा जितना उस गुनाह एवं पाप पर चलने वाले को मिलेगा, उनके

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गुनाहों मे से कुछ कमी न होगी] सहीह मुस्लिम /16/227

यह बात याद रहे कि आपका दूसरों को आवाहन एवं दावत देना उम्र में बढ़ोतरी का कारण है अतः अगर आप ने किसी एक को बताया कि वह हज़ारों नेकियाँ कमाकर अपनी लाभप्रद उम्र कैसे लम्बी करे तो आप को भी उसी जैसा फल मिले गा और अगर एक से अधिक लोगों को बताया तो --------!

अब आप ध्यान दें कि आपकी मुफीद तथा लाभदायक उम्र कितनी लम्बी हो जायेगी ?

क्या आप इससे ये परिणाम नहीं निकालते है कि अल्लाह की ओर दावत तथा आवाहन दने का मैदान बहुत उपजाऊ मैदान है जिस में

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आप अपनी लाफदायक उम्र बढ़ा सकते है इसलिए इस्तेकामत(दढ़ता) के साथ अपने समाज में इस शुभ कार्य में भारी भाग लें ।

चौथा बयानः समय को गनीमत एवं परिहार जानकर उम्र लम्बी करना

समय को गनीमत जानने की अहमियतः आप का समय ही आप का जीवन और आप की असल पूँजी है, दूसरे शब्दों में यही आपकी उम्र है, इस लिए उसमें से एक मिनट भी अल्लाह तआ़ला की नाफर्मानी में बिताने से बचें अबदुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाह अन्हो कहते थे :

ما ندمت على شيء ندمى غربت شمسه،نقص فيه أجلى و لم يزد فيه عملى

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

[किसी चीज़ पर मुझे उतनी शर्मिन्दगी और हसरत व अफसोस नहीं हुवा जितना उस दिन पर हुवा जिस दिन का सूरज डूब गया,जिससे मेरी उम्र कम होगई और उस में मेरा अमल अधिक नहीं हुवा]

अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया :

مَا جَلَسَ قَوْمٌ مَجْلِسًا فَلَمْ يَذْكُرُوا اللَّهَ فِيهِ إِلَّا كَانَ عَلَيْهِمْ تِرَةً وَمَا مِنْ رَجُلٍ مَشَى طَرِيقًا فَلَمْ يَذْكُرْ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ إِلَّا كَانَ عَلَيْهِ تِرَةً وَمَا مِنْ رَجُلٍ أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ فَلَمْ يَذْكُرْ اللَّهَ إِلَّا كَانَ عَلَيْهِ تِرَةً

[जब भी लोग किसी मजलिस अथवा सभा में बैठे और उसमें अल्लाह को याद नहीं किया तो उनकी अफसोस एवं हानि के सिवा कुछ न

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

होगा,और जब भी किसी ने कोई मार्ग तय किया और उसने अल्लाह को याद नहीं किया तो उसके लिए अफसोस एवं नुकसान होगा, जो भी आदमी अपने बिस्तर पर आया और उसने अल्लाह को याद्र नहीं किया तो उसके लिए हसरत व नुकसान होग] इसे इमाम अहमद ने रिवायत किया है और अरनऊत ने जामे अल् ओसूल /4/472 में इसकी सनद को हसन कहा है

अगर आप कुछ सल्फे स्वालिहीन की सीरत (जीवनचरित्र)पढ़ें गे तो मालूम होगा कि वह लोग किस प्रकार अपने समय को गनीमतऔर अनमोल समझकर एक सेकन्ड भी खोया नहीं करते थे,इससे आप को रोज़ाना का टाईम टेबल बनाने में बहुत आसानी होगी, बल्कि कुछ सल्फे स्वालिहीन तो अपने समय के बारे मे उस से अधिक लोभी थे जितना आज हम अपने मालों के बारे में लोभी हैं, और अल्लाह

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ही मददगार और सहायक है ।
तो क्यों आप अपने समय को ऐसे कामों में नहीं लगाया करते जिस से आपको अपने दुनियावी व उखिरवी कामों में लाभ हो? कब हम अपनी सुसती से जागरुक होकर अपने पैदा होने के भेद और मक्सद को समझेगें ? अपने समय से लाभ उठाने में आप इस तरह मिसाली बनें,कि बेदारी की हालत में अपनी ज़बान और कान को खैर व भलाई के कामों में प्रयोग करें क्यों कि आप नहीं जानते हैं कि किस समय आपके दिल की हरकत बन्द हो जाये, इस लिए अधिक से अधिक नेकियाँ जमा करने में अपना समय लगायें।

अपने जीवन को अपनी मृत्यु से पहले गनीमत समझें : अल्लाह तआ़ला की मखलूक में आदमियों की उम्र में अन्तर और कमी एवं ज़्यादती उन चीजौं में से है जिन्हें अल्लाह तआ़ला लोगों से राज़ तथा भेद में रखा है अतः

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अल्लाह तआ़ला ज़िन्दगी में हर एक को समय और मोहलत देता है ताकि वह देखे अमल करने वाले किस प्रकार अमल करते हैं,तो क्या आप ज़िन्दगी समाप्त होने से पहले उस मोहलत को गनीमत समझें गें ?!

आप यह बात अच्छे प्रकार जानते है कि जबसे आप पैदा हुए हैं उसी समय से आपकी उम्र हर पल घट रही है तो आप अपनी उम्र लंबी करने के लिए अधिक से अधिक नेकियाँ जमा करने की भरपूर कोशिश क्यों नहीं करते ? उमर बिन अबदुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अ़लैहे ने फर्माया है :

إن الليل والنهاريعملآن فيك فآعمل انت فيهمآ

[तुम्हारे बारे में दिन और रात अपना काम कर रहे हैं तो आप भी उन दोनों में अपना काम करते रहें]

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आओ अब अबु होरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से दो लोगों की कहानी सुनें जिनकी मृत्यु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में हुई ताकि जन्नत में उन दोनों के रुतबे में अन्तर का कारण जान सकें। कुज़ाअ़ह क़बीले के बली (एक स्थान का नाम है) के दो आदमी थे। दोनों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ पर इस्लाम स्वीकार किया उन में एक शहीद होगया और दूसरे की एक वर्ष बाद अपने से मृत्यु होगई, तलहा बिन ओबैदुल्लाह ने फर्माया : मैने देखा कि एक वर्ष पीछे कर दिये जाने वाला शहीद से पहले जन्नत में दाखिल किया गया, इस से मुझे आशचर्य हुवा और जब सुबह हुई तो मैने इसको आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बयान किया। या आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बयान्न किया गया। जिस पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया : क्या

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उसने इसके बाद रमज़ान का रोज़ा(सौम) नहीं रखा और 6हज़ार रकाअ़त नहीं पढ़ी और इतनी इतनी सुन्नत नहीं पढ़ी ? सहीह अत्तरगीब 368

तुम अल्लाह तअ़ाला के दिये हुये अवसर तथा मोहलत पर उसकी हम्द और प्रशंसा बयान करो क्यों कि लंबी उम्र ऐसा अल्लाह का दान और बहुमूल्य तोहफा है जो अल्लाह तअ़ाला अपने बन्दों में जिसे चाहता है देता है, इस लिए अपने खेल कूद और नीद को कम करके अपनी कब्र में आराम देने वाले सामान इकट्ठा कर लो निःसंदेह तुम्हारे पोछे ऐसी नींद है जिस की सुबह प्रलय के दिन होगी।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तौबा के लिए जल्दी करना :

ऐ मेरे मुसलमान भाई ! तौबा करके अल्लाह तआ़ला की ओर जल्दी पल्टो और कान लगाकर सुनो वह तुम्हें पुकार रहा है !

وَسَارِعُواْ إِلَى مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالأَرْضُ أُعِدَّ تْ لِلْمُتَّقِينَ

[और अपने रब की बख्शिश और उसकी जन्नत की तरफ दौड़ो जिसकी चौड़ाई आसमान व जमीन के बराबर हैं,जो परहेज़गारों के लिए तैयार की गयी है]सूरह आले इमरान 132

अल्लाह तआ़ला की ओर जल्दी भागने वाले उस से पीछे रहने वाले के समान नहीं हैं ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

विशेष लोगों की तोबा :

अपनी उम्र लंबी करने की इच्छा व आरज़ू रखने वाले मुसलमान को चाहिए कि वह अपनी हिम्मत और समझ को परवान दे, अतः वह अपने समय को बेफायदा कामों, घमन्ड और गुलू (सीमा से आगे बढ़ने)में नष्ट करने को अपने बारे में ऐसे उलंधन और ना फर्मानी समझे जिस से बहुत जल्दी तौबा करना ज़रूरी है ।

अल्लामा इबने कय्इम रहमतुल्लाह अ़लैहि ने फर्माया है : और खास लोग समय को खेल कूद और गुलू (सीमा से अगे बढ़ने) में नष्ट करने से तौबा करते है, क्यों कि इस से कमी आती है और भय का प्रकाश बुझ जाता है, परन्तु अपने समय की हिफाज़त करने वाला सदा ऊंचे स्थान की ओर बढ़ता रहता है,अब अगर वह उस

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

समय को खो दे तो अपना स्थान नहीं पा सकता, बल्कि वह पस्ती का शिकार हो जायेगा, ऐसी दिशा में वह आगे बढ़ने के बजाये पीछे हो जायेगा, और आदमी बराबर चल रहा है उसकी तबीयत में ठहराव नहीं है चाहे ऊपर या नीचे,आगे या पीछे, और तबीयत व शरीअ़त में बिल्कुल ठहराव नहीं है, बल्कि कुछ दर्जे हैं जो बड़ी तेज़ी से लपेट दिये जायेंगे जन्नत की ओर या जहन्नम की ओर, इसलिए कोई तेज़ रफ्तार चलने वाला है तो कोई धीरे, कोई पीछे चलने वाला है तो कोई आगे, और मार्ग में कोई बिल्कुल ठहरा हुवा नहीं है, बल्कि जिसओर जाना है उस में लोग विभिन्न प्रकार के हैं इसी प्रकार तेज़ गति और सुस्ती में भी विभिन्न हैं

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ نَذِيرًا لِّلْبَشَرِ لِمَن شَاء مِنكُمْ أَن يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ

[निःसंदेह बड़ी चीज़ो में से एक है, आदम की संतान को डराने वाली है, (यानी) उसे जो तुम से आगे बढ़ना चाहे या पीछे हटना चाहे]

वह ठहरा भी नहीं रहेगा क्यों कि जन्नत और जहन्नम के बीच कोई स्थान नहीं है, तथा किसी भी राही के लिए दोनो दुनिया के सिवाय कोई तीसरा मार्ग भी नहीं है इसलिए जो उसकी ओर नेक अमलों द्वारा नहीं बढ़ेगा तो वह बुरे अमलों के कारण पीछे जायेगा । तहज़ीब मदारिजुस्सालिकीन/1154-155

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हलाल और (मुबाह) जायज़ अमलों को सवाब की नीय्यत से करना

हलाल और जायज़ अमलों को सवाब की नीयत से करना समय को गनीमत समझना है । मुबाह कहते हैं जिसके करने वाले को न सवाब दिया जाये और न ही छोड़ने वाले को पाप दिया जाये जैसे खाना,पीना,सोना और सैर व तफरीह आदि, मनुष्य इन हलाल चीजों से बेनेयाज़ तथा निःसपृह भी नहीं हो सकता और इन हलाल चीज़ों को सवाब की नीयत से करने का अर्थ यह है कि इनके करते समय अल्लाह तआ़ला की आज्ञापालन करने तथा पापों से बचने पर शक्ति एवं ताकत प्राप्त करने की नीयत करें,ऐसा करने से इन्शा अल्लाह आपको फल तथा सवसब मिलेगा और इस प्रकार से आप अपनी जीवन के अधिक समय को गनीमत

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

समझकर नेकियाँ जमा करने के लिए अपनी लाभकारी उम्र बढ़ा लेंगें ।

इबने रजब रहमतुल्लाह अ़लैहे ने फर्माया हैं : जब कोई मोमिन अल्लाह तआ़ला की इताअत एवं आज्ञापालन पर ताकत हासिल करने की नीयत से अपनी मुबाह शहवत(जायज चाहत) इस्तेमाल करता है तो उसकी शहवत तथा चाहत इताअत में बदल जाती है और वह उसपर सवाब पाता है, जैसा कि मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने फर्माया है : मैं अपने जागने की तरह नींद को फल तथा सवाब का कारण समझता हूँ। अर्थात वह अपनी नींद से आखिरी रात में कियामुल लैल की नीयत करते थे चुनांचह वह कियाम की तरह अपनी नींद से सवाब की आशा रखते थे। जामिउल उलूम वल हुक्म /2/192 नींद वगैरह की हालत में उम्र गुज़ारने पर सवाब की उम्मीद करने से आप को कोई

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तकलीफ नहीं होगी अलबत्तह ये आप की मुफीद व लाभकारी उम्र बढ़ाने का एक उचित साधन है।

तीसरी फसल(अध्याय)

आप अपने काम में अने वाली,उपयोगी उम्र की हिफाज़त कैसे करें ?

ऐ मेरे मुसलामा भाई !
क्या इस अच्छे व भलाई के बाद जिसका ज्ञान इन्शा अल्लाह आप को जल्द ही होगा, जिससे आपकी उखरवी आमदनी में ज़्यादती होगी, क्या आप उम्र बरबाद करना पसंद करेंगे ? क्या आप के लिए यह उचित नहीं कि एखलास के साथ इन कामों की पाबन्दी करें ताकि आप कियामत के दिन उन्हीं के साथ अल्लाह तआ़ला से मुलाकात करें,इस लिए अल्लाह की दया की

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ओर दोड़ें तथा कियामत के दिन अपनी नेकियों की हिफाज़त के लिये चार कामों से बचें

1- नेकियों को खोने तथा नष्ट करने वाली चीज़ो से

आप ये बात जान लें कि कुछ बड़े-बड़े ऐसे गुनाह हैं जो नेकियों को बिल्कुल नष्ट करके बुराईयों के पलड़े को भारी कर देते है। चुनांचह आप उन्हें अच्छे प्रकार जान लें और उनसे बचें । याद रखें नेकियों को नष्ट कर देने वाले कामों में से किसी एक काम का करना तुम्हारी सारी नेकियाँ को बरबाद करने के लिए काफी हैं चाहे नेकियाँ पहाड़ जैसी हो इसलिए सावधान रहें । सोबान रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी-ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से एक ऐसी हदीस बयान किया है जिसने नेक लोगों के शयानागार(सोने के स्थानों) को चकना चूर कर दिया और उनके नेक अमलों

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पर उन्हें अधिक ड़रा दिया उन्होंने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया है :

[मैं अपनी उम्मत मे से कुछ ऐसे लोगों को ज़रूर जानता हूँ जो महाप्रलय के दिन तिहामा के सुफेद पहाड़ के प्रकार नेकियों लेकर आयेंगे मगर अल्लाह तआला उन्हें गर्द व गुबार के प्रकार हवा में उड़ा देगा] सौबान ने पूछा आप हमें उनकी पहिचान बतायें ताकि हम लोग नाजानकारी के कारण उनमें से हो न जायें ! तो आप ने फर्माया : [वह तुम्हारे रंग व नसल के तुम्हारे भाई होंगे वह रातों में वैसे ही इबादत करेंगे जैसे तुम करते हो परन्तु वे ऐसे लोग होंगे कि जब वह अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों के साथ एकान्त में होंगे तो उसे कर दालें गें] सिलसिलतुस्सहीह -अलबानी 5052-

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

2- अमल पर तकब्बुर,घमंड और खुद पसंदी एवं स्वेच्छाचारी :

अपने नेक अमल की ज़्यादती पर गोरूर व घमण्ड से बचें क्यों कि यह एक प्रकार अल्लाह तआ़ला पर एहसान जितलाना है, ऐसा करने से आप पस्ती से दोचार होजायें गें, और अल्लाह तआ़ला ने इससे मना फर्माया है :

وَلا تَمْنُن تَسْتَكْثِرُ

[एहसान करके अधिक लेने की इच्छा न करो] सूरह मुद्दिस्सिर 6

इसी लिए सलफे स्वालिहीन रहेमहुमुल्लाह ने अमल पर खुदपसंदी की बरबादियों से सावधान किया है । अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाह अन्हु ने फर्माया है :

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

[निजात और छुटकारा दो चीज़ों में है तकवा और निय्यत, और हिलाकत व बरबादी दो चीज़ो में है : नाउम्मीद(निराशा) और खुद पसंदी] अधिक नेकियों पर घमन्ड की आफतों में से एक बड़ी आफत ये है : कि कोई केवल अपनी नेकियों को याद रखे और ये समझे कि जन्नत में जाने के लिए काफी हैं जबकी वह अपनी बुराईयों से गाफिल है |

सलमा बिन दीनार ने फर्माया है : [बन्दा नेक अमल करता है और उस अमल को करते हुए उसे खुशी हासिल होती है, हालाँकि उसके लिए अल्लाह ने जो बुराई पैदा की है उस से कहीं अधिक हानिकारक है | बन्दा गुनाह(पाप) करता है जिसे करते समय उसे नागवार गुज़रता है जबकि अल्लाह ने जो भ लाई पैदा किया है उसके लिये ज़्यादह नफा बख्श तथा लाभकारी है |वह इस प्रकार कि

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बन्दा नेक अमल करता हैं जिस से उसे खुशी होती है यहाँ तक कि वह खुशपसंदी का शिकार हो कर अपने आप को बड़ा तसव्वर करने लगता है चुनांचह वह गुमान करने लगता है कि इस नेकी के कारण इसे दूसरों पर प्रमुखता तथा फज़ीलत प्राप्त है, हालाँकि हो सकता है कि अल्लाह तआ़ला इस अमल को और उसके साथ बहुत सारे अमल को नष्ट करदे । निःसंदेह एक बन्दा जब बुराई करता है तो उसे वह बुराई नापसंद लगती है, हो सकता है इस के द्वारा अल्लाह तआ़ला इसके दिल में ऐसा खौफ व डर पैदा करदे कि जब वह अल्लाह तआ़ला से मुलाकात करे तो उसका डर उसके दिल में बाकी हो]

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अधिक नेक कामों पर गोरूर और खुद पसंदी के कुछ इलाज :

(क) इस बात पर पक्का यकीन तथा दृढ़ विश्वास हो कि आप को इस जीवन में जिस नेक काम की तौफीक मिली है वह सरासर अल्लाह तआ़ला की दया और करम तथा मेहरबानी है, अल्लाह तआ़ला ने फरमाया :

وَمَا بِكُمْ مِنْ نِعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ

[तुम्हारे पास जितनी भी नेमते है सब उसकी दी हुई है] सूरह नहल 53

(ख) ये बात कभी न भूलें कि अल्लाह के कुछ बन्दे हैं जो आप से कहीं अधिक सवाब कमाते हैं जैसे मुसीबतों पर सब्र व बरदाश्त करने

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

वाले चुनांचह उन्हें इस पर बेहिसाब सवाब दिया जायेगा, अल्लाह तआ़ला ने फर्माया :

إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ

[सब्र करने वालों ही को उनका पूरा बिना हिसाब फल दिया जाता है] सूरह ज़मर 10

इस लिए आपको अपने अधिक अमल पर घमंड़ और धोका नहीं होना चाहिए क्योंकि ज़िन्दा आदमी कभी भी फितने से मामून व महफूज़ नहीं होता ।

(ग)- यह याद रहे कि आप कितना भी सवाब जमा करलें कियामत के दिन की होलनाकियों के सामने उसकी कोई हैसियत नहीं होगी रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया है :

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

" لَوْ أَنَّ رَجُلا يُجَرُّ عَلَى وَجْهِهِ مِنْ يَوْمِ وُلِدَ إِلَى يَوْمِ يَمُوتُ هَرِمًا فِي مَرْضَاةِ اللَّهِ لَحَقَّرَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. "

[अगर कोई व्यक्ति पैदाईश के दिन से लेकर बुढ़ापे में मौत तक अपने चेहरे के बल अल्लाह तआ़ला की रिज़ामंदी (सहमति)तथा प्रसन्नता में अपने चेहरे के बल घसीटा जाये तो वह इसे कियामत के दिन हकीर और कम समझेगा]
सिलसिलतुल अहादीस अस्सहीहा 446

(घ) - अपने अधिक अमल पर आप एतिमाद तथा भरोसा न करें क्यों कि आप बिल्कुल नहीं जानते हैं कि आपका अमल कुबूल हुआ या नहीं,इबने औ़न रहमतुल्लाह अ़लैहि ने फर्माया है :

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

[अधिके अमल पर एतिमाद तथा भरोसा न करें क्यों कि तुम नहीं जानते कि वह,कुबूल हुआ या नहीं और,अपने पाप पर संतुष्ट (मुतमईन) न रहें क्यों कि तमु नहीं जानते कि तेरा पाप तुझसे मिटा दिया गया या नहीं, सारा का सारा अमल तुझ से गायब है] (जामेउल ओलूम वल हिक्म 1/438

आ़ईशा रज़ि यल्लाहु अन्हा ने फर्माया है : मैंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से इस आयत के बारे में पूछा :

"وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ "

(और जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं और उनके दिल कपकपाते हैं)(सूरह मोमिनून-60)

(डरने वाले कौन लोग हैं) वह जो शराब पीते हैं, चोरीयाँ करते हैं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

वसल्लम ने फर्मायाः नहीं ऐ सिद्दीक की लाडली बल्कि वह लोग जो सलात(नमाज़) पढ़ते है, रोज़ा(सौम) रखते है. सदका व दान करते है परंतु डरते रहते हैं कि कहीं ये कुबूल न हो कर नकार न दिये जायें । यही वह लोग हैं जो भलाईयों में जल्दी करते है] सहीह इब्ने माजाह /3384

3- लोगों के हुकूक तथा अधिकार पर जुल्म एवं ज़्यादती करने से बचें !

अपने किसी मुसलमान भाई को तकलीफ तथा दुख देने और लोगों की हक़ मारने से बिल्कुल बचें क्यों कि अगर तुमने ऐसा किया तो लोग क़ियामत के दिन अपने पूरे हक को लेने के लिए तुम्हारी जमा की हुई नेकियाँ ले लेंगे । जैसा कि अबु हुरैरा रज़ियल्लाह अन्हु ने नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सहीह सनद के साथ रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूछा :

[क्या तुम जानते हो कि मुफलिस (निर्धन) कौन है ? सहाबा किराम ने कहा, हम में मुफ लिस (निर्धन)वह आदमी है जिस के पास दिर्हम और सामान न हो,तो आप सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम ने फर्माया : मेरी उम्मत एवं समुदाय का मुफलिस (निर्धन)क़ियामत के दिन ज़कात, सलात(नमाज़) रोज़ा(सौम़) लेकर अयेगा, साथ ही साथ इसको गाली दिया होगा। उसपर तुहमत लगाई होगी, इसका माल खाया होगा, उसका खून बहाया तथा हत्या किया होगा और इसको मारा होगा, चुनांचह उन लोगों को उसकी नेकियाँ दे दी जायेंगी और उस पर जो हुकूक है उसका फैसला होने से पहले अगर उसकी नेकियाँ समाप्त होजायेंगी तो उन लोगों की खताऐं(गलतियाँ) उसके ऊपर लाद दी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जायेंगी फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जायेगा] सहीह मुस्लिम /16/135

4- ऐसी बुराईयों से बचो जिनका पाप जारी रहेगा :

जहाँ आप ऐसे कामों के इच्छुक तथा हरीस हैं जिनका सवाब वफात के बाद भी जारी रहे वहीं पर आप पूरे प्रकार ऐसी बुराईयों से भी मुकम्मल बचें जिनका पाप मृत्य के बाद जारी रहेगा,नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फर्माया :

[जिसने इस्लाम में कोई अच्छा मार्ग निकाला तो उसे उसका सवाब एवं फल मिलेगा और बिना कमी किए हुए उस पर चलने वालों का भी उसे सवाब मिलेगा । तथा जिसने इस्लाम में कोई बुरा मार्ग निकाला तो उसे उसका पाप एवं गुनाह मिलेगा और बिना कमी किए हुए

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उस पर चलने वालों का भी उसे पाप मिलेगा]
सहीह मुस्लिम /16/226

इमाम शातबी रहमतुल्लाह अ़लैह ने फर्माया है : (शुभसंदेश है उस आदमी के लिए जिसके मरने के साथ साथ उसके गुनाह और पाप भी मर गये,और बड़ा दुर्भाग्य है उस आदमी के लिए जो मर गया परंतु उसके पाप सौ वर्ष या दो सौ वर्ष बाकी रहे, जिसके कारण उसे उसकी क़ब्र में अज़ाब(दण्ड)दिया जाए गा तथा उसके समाप्त होने तक उस से पूछा जायेगा)
अल मुवाफिकात फी अुसूलि श्शरीअह -इमाम शातबी /1/229

और हबीब अबु मुहम्मद ने कहा है कि आदमी का सौभाग्य है कि उस के मरते ही उसके गुनाह तथा पाप मर जायें।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इसका उदाहरण कि ज़िसके मरने से उसके गुनाह तथा पाप नहीं मरते वह माता पिता हैं जिनका बच्चा अगर इस्लाम का पाबन्द बनता है तो उसे रोकते हैं या उसके लिए हराम फिल्मी,केसिटैं खरीद के देते हैं या उसे ऐसे कामों में आज़ाद किये हुए होते हैं।

इसलिए एक मुसलमान को ऐसे जारी रहने वाले गुनाहों से बचना चाहिए जो कि मुसलमानों के घरों को बरबाद कर देने वाले हैं।

खुलासा (निचोड़,साराशं) :

एक मुसलमान का मक्सद (उद्देश्य) आम लोगों से बिल्कुल अलग थलग होता है, मुसलमान का मक्सद अल्लाह तआ़ला की एबादत और अपने समय को गनीमत जानकर ऐसे नेक कामों द्वारा तरक्की करना जिसके कारण अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसे

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उच्चतम स्थान तथा रुतबा और सर्वोच्च शान बान दे , जब कि सबसे बड़ी परेशानी जो उसे आती है ये कि वह सोचता है कि उसकी उम्र कम है मगर कुछ ऐसे नेक आमाल हैं जो उम्र लंबी करने पर सहयोगी और मददगार हैं ।

खातमा (समाप्ति)

मैं पुनः दर पर्दा और खुल्लम खुल्ला, बाह्यन्तर,अप्रत्यक्ष सारे कामों में अल्लाह तआ़ला का तकवा,भय अपनाने और अपनी मृत्य से पहले अपनी जीवन की फुरसत को गनीमत समझने की दावत तथा (आमंतरण) देता हूँ,क्यों कि पुस्तक में लिखी गयी अधिक चीज़ों का ज्ञान आप को पहले से है फिर भी ये केवल कुछ अम्लों का सवाब जान कर उसे करने की हिम्मत बढ़ाने के लिए याद दिलाना और दावत है । अबू अब्दुल्लाह अलबरासी ने

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

फर्माया हैः (जो आदमी अमलों का सवाब नहीं जानता उसके लिए हर हाल में अमल कठिन होता) सिफतुस्सफवा- इबनुल जौज़ी /1/566

और सलात व सलाम हो मखलूक में सबसे अच्छे, सारी इंसानियत को हिदायत का मार्ग दिखाने वाले हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर और आप के सारे आल व साथियों पर और क़ियामत तक आपके मार्ग दर्शन पर चलने वालों पर । और हर प्रकार की तारीफ केवल अल्लाह तआ़ला के लिए है ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अनुवादक का अनुरोध :

इस पुस्तक के पढ़ने वालों से अनुरोध हैं कि मुझे, मेरे अहल व अयाल,परिवार जन, वालिदैन और मेरे अध्यापकों तथा विशेषतः हमारी सुपुत्री **खौलह सलफी** जिसने बडी परिश्रम करके इसे कंप्यूटर से लिखा और हमारे घनिष्ट मित्र तथा सौभाग्यशाली शिष्य **अबूसअ़दआ़ज़मी शेख़मुज़फ्फर**(बी॰एस॰बी॰एड॰) जिन्हों ने अनेक बार पुनरीक्षण करके चार चाँद लगाया को अपनी खुसूसी दुआ़ओं में याद रखेंगे अल्लाह तआला हर मुसलमान भाई बहन को तौहिद और रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत पर कायम रखे शिर्क और नाफरमानी से बचने और अपने गुनाहों से तौबा करने की तौफीक दे, ज़िन्दगी का हर क्षण अपनी प्रसन्नता अनुसार अपनी एबादत

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

में गुज़ारने का मौका नसीब फरमाये और अच्छी मौत दे आमीन ।

मैं अहसा इस्लामिक सेंटेर के प्रधानव्यवस्थापक तथा उनके सहयोगी दलों का बहुत बहुत आभारी हूँ कि उन्हों ने हमें इस शुभ तथा अत्यन्त लाभदायक कार्य का अवसर प्रदान किया साथ ही साथ अपने घनिष्ट मित्र तथा सौभाग्यशाली शिष्य अबूसअ़द आ़ज़मी साहब तथा अपनी सुपुत्री खौलह सलफी का बहुत आभारी हूँ निःसंदेह इन्हों ने इस पुस्तक को तय्यार करने में न भुलाने वाला सहयोग किया है अल्लाह पाक इसी के बदले इन्हें संसार तथा प्रलोक की हर भलाई दे आमीन।

ऐ मेरे अल्लाह ! तू अपनी दया से इस पुस्तक को इसके लेखक,अनुवादक,प्रकाशक,मेरी पत्नी तथा सन्तान ,मेरे माता पिता, छोटे बडे भाई

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बहनों,मेरे सारे अध्यपकों तथा जिन जिन लोगों ने हमारी तालीम व तरबिय्यत मे कुछ भी भाग लिया है उनके लिए मेरे इस कोशिश को सदौव जारी रहने वाला सदक़ा बना दे और इसे कुबूल फरमा तू ही दुआ़ओं को सुनने वाला और कुबूल करने वाला है ।

आपकी दुआ़ओं का भूका :

अताउर्रहमान अब्दुल्लाह सईदी.

ग्रामः हरहटा-तुलशीपुर

जनपद-बलरामपुर-यूपी 050940266

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बिषय सूची

	बिषय	पृष्ठ सं
1	भूमिका अनुवादक	3
2	भूमिका लेखक	8
3	आप क्यों जीना चाहते हैं ?	10
4	उम्र लंबी करने का अर्थ	13
5	उम्र लंबी होने की दुआ	15
6	दूसरी अध्यायः उम्र लम्बी करने वाले कार्य	17
7	पहला बयान : अच्घे अखलाक द्वारा उम्र लंबी करना	17
8	पहला विषय : रिश्ते जोड़ना	18
9	दूसरा विषय : अच्छे अखलाक़	20
10	तीसरा विषय : पड़ोसियों के साथ एहसान	22
11	दूसरा बयानः दो गुने फल वाले अमलों द्वारा उम्र लंबी करना	25
12	पहली शाख : (सलात) नमाज़	26
13	मस्जिद में जमाअत की पाबन्दी	28
14	घर में नफल अदा करना	31
15	जुमा सलात (नमाज़)के कुछ आदाब	32

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

16	ज़ोहा सलात की पाबन्दी	34
17	दूसरी शाख : हज और उमरा	37
18	अपने धन से लोगों को हज कराना	38
19	इशराक की सलात (नमाज़)	39
20	मस्जिदों के दीनी प्रोग्रमों में भाग लेना	41
21	रमज़ान में उमरा करना	43
22	मस्जिद में फर्ज़ नमाज़ की अदायेगी	44
23	कुबा मस्जिद में नमाज़ पढ़ना	47
24	तीसरी शाखः आप मुअज्जिन बनें या मोअज़्ज़िन के अज़ान का जवाब दें	48
25	चोथी शाख : सियाम (रोज़े)	53
26	विशेष दिनों के रोज़े	54
27	रोज़ा रखने वालों को इफ्तार कराना	57
28	पाँचवी शाखः शबेक़दर में क़ियामुल्लैल करना	59
29	छठी शाख : जिहाद	61
30	सातवीं शाखःज़िलहिज्जाह में नेक अमल	64
31	आठवीं शाख :कुछ सूरतों की तिलावत	69
32	नवीं शाख : अधिक से अधिक ज़िक्र	72
33	दसवीं शाखःलोंगोंकी ज़रूरतें पूरी करना	80

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

34	तीसरा बयानःऐसे अमलों द्वारा उम्र लंबी करना जिनका का सवाब मरने के बाद भी जारी रहता है	88
35	पहली शाखः पहरेदारी में देहांत पाना	91
36	दूसरी शाखः सदकए जारिया	94
37	तीसरी शाखः भलाई पर बच्चे की तरबियत	100
38	चौथी शाखः लोगों को दीनी शिक्षा देना	102
39	चौथा बयानःसमय को गनीमत जानकर उम्र लंबी करना	107
40	तौबा के लिए जल्दी करना	114
41	विशेष लोगों की तौबा	115
42	हलालअमल सवाब की नीयत से करना	118
43	तीसरी अध्यायः अपनी कारआमद उम्र की हिफाज़त आप कैसे करें ?	120
44	नेकियों को नष्ट करने वाले कार्य	121
45	अमल पर तकब्बुर, घमंड	123
46	नेकियों पर गोरूर के कुछ इलाज	126
47	लोगों के हुकूक पर जुल्म करने से बचें	130
48	ऐसी बुराईयों से बचें जिनका पाप जारी रहेगा	132
49	खुलासा (निचोड़)	134

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

50	खातमा (समाप्ति)	135
51	अनुवादक का अनुरोध	136
52	बिषय सूची	140

محتويات الكتاب

المقدمة

الفصل الأول : أهمية الموضوع

الفصل الثاني: الأعمال المطيلة للأعمار

1-إطا لة العمر بالأخلاق الفاضلة

2- إطا لة العمر بالأعمال ذات الأجور المضاعفة

3- إطالة العمر بالأعمال الجاري ثوابها إلى ما بعد الموت

4- إطالة العمر باستغلال الوقت

الفصل الثا لث: كيف تحافظ على عمرك الإنتاجي

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com